ॐ

गो-आधारित ग्राम विकास

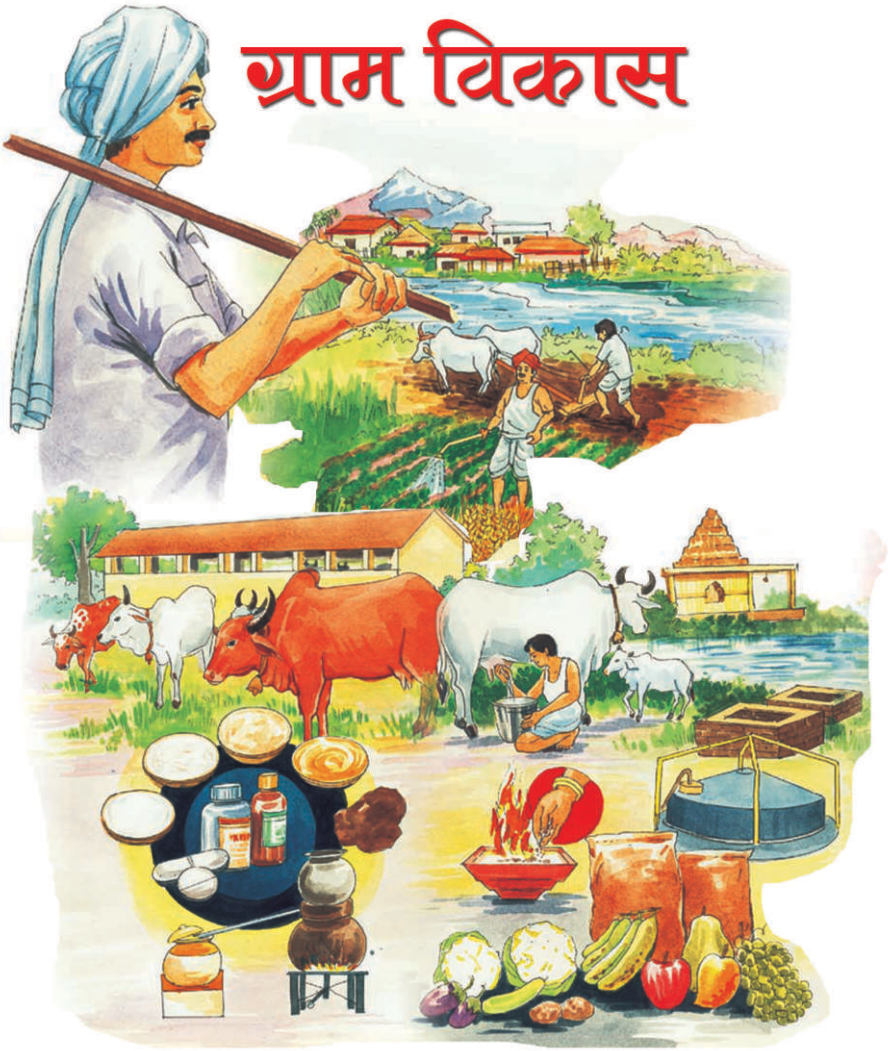

चलें गाँव की ओर...

चलें गाय की ओर...

प्रकाशक : **गोसेवा परिवार**
524B, रवीन्द्र सरणी
कोलकाता - 700003
E-mail : gosevaparivar@gmail.com
website : gosevaparivar.org
81-0033-0044

संकलनकर्त्ता : श्री ललित आनन्द
933-102-7471

प्रथम संस्करण : बुद्ध पूर्णिमा, बैशाख पूर्णिमा
युगाब्ध, 5119, सम्वत् 2074

प्रुफ चेकिंग : श्रीमति आशा तुलस्यान
(M.A. (Hindi), B.Ed., M.Phil)

मुद्रक : नीरज झुनझुनवाला
१०, पी. जी. लेन, कोलकाता

गोसेवा निधि : ₹ 50/-
(पुस्तक के विक्रय से प्राप्त धनराशी का उपयोग
गोसेवा के कार्यों मे ही किया जायेगा।)

ॐ

गो-ग्राम गीत

स्वावलम्बी स्वाभिमानी भाव जगाना है।
चलो गाँव की ओर हमें फिर देश बनाना है।।

घर-घर में गौ माँ की सेवा, पशुधन का हो पालन,
दूध, दही, घी, मट्ठा, लस्सी हर घर में हो सेवन,
बने औषधि गोमुत्र से, खाद और ईंधन गोबर से,
स्वच्छ रहेंगें स्वस्थ रहेंगे, भाव जगाना है।
गौपलान से खुशहाली हर गाँव में लाना है।।१।।

गाँव में होगी जैविक खेती, जमीन के निचे पानी,
अनाज सब्जी फुल और फल से सजेगी धरती रानी,
कोई न होगा भूखा प्यासा पूरी होगी सबकी आशा,
स्नेह और सहकारिता का भाव जगाना है।
कृषि आधारित समृद्धि हर गाँव में लाना है।।२।।

ग्राम नगर वन के वासी सब भारत की संतान,
एक संस्कृति एक धर्म है पुरखें सबके समान,
ऊँच-नीच का भेद भुलाकर कन्धे से कन्धा मिलाकर,
समरसत्ता का भाव जगाकर कदम बढ़ाना है।
इसी हेतु से तन, मन धन जीवन लगाना है।।३।।

आत्मनिवेदन

बहुत दिनों से एक ऐसी पुस्तक की खोज में था जिसे पढ़कर गाँव का किसान गाय की उपयोगिता को समझ सके और गाय के बिना स्वयं को अधूरा महसूस करे। ऐसी कोई पुस्तक हाथ न लगने के कारण, उस कमी को इस पुस्तक के माध्यम से पूरा करने का प्रयास किया है।

पिछले दो दशकों से गोसेवा के क्षेत्र में काम करते हुए जो अनुभव प्राप्त हुए उसी का संकलन इस पुस्तक के माध्यम से किया गया है। पुस्तक के प्रकाशन में प्रत्यक्ष या परोक्ष रुप से जिनका सहयोग प्राप्त हुआ, उन सभी का आभार।

आपसे निवेदन है कि इस पुस्तक को गाँव-गाँव तक पहुँचाने में हमारा सहयोग करें। इस पुस्तक के विषय में आप अपने सुझाव व विचार हमें अवश्य लिख भेजें।

धन्यवाद सहित,

ललित आनंद
कोलकाता
9331027471
lalit.kolkata@yahoo.com

बुद्ध पूर्णिमा, बैशाख पूर्णिमा
युगाब्ध 5119, सम्वत् 2074
10 मई 2017

विषय सूची

पृष्ठ क्र:

- मेरा गाँव मेरा तीर्थ १
- शहरीकरण का दुष्परिणाम और गाँव के अस्तित्व पर संकट ३
- गाँव की समस्याओं का कारण ९
- गाय ही क्यों ? १२
- **गो-आधारित ग्राम विकास के पाँच आयाम** ... १६
  - १. गो-आधारित कृषि १७
  - २. गो-आधारित अक्षय ऊर्जा २८
  - ३. गो-आधारित मानव चिकित्सा एवं स्वास्थ्य ३२
  - ४. गो एवं कृषि आधारित ग्रामोद्योग ३८
  - ५. गोसंवर्धन, नस्ल-सुधर एवं गो-चिकित्सा ... ४६
- गो-आधारित ग्राम विकास से होने वाले लाभ ... ५९
- दो गोवंश और एक एकड़ भूमि से प्रतिवर्ष दो लाख की आय ६१
- गाँव के विकास में शहर का योगदान कैसे हो?... ६४
- सरकारी योजनायें, सहयोग एवं अनुदान ... ६६
- सहकारिता: सफलता का मूल मन्त्र ६८
- गाँव का विकास कौन करेगा ? ६९

मेरा गाँव मेरा तीर्थ

कहते हैं भारत गाँव में बसता है, अर्थात् भारत में गाँव का महत्व शहर से ज्यादा है।

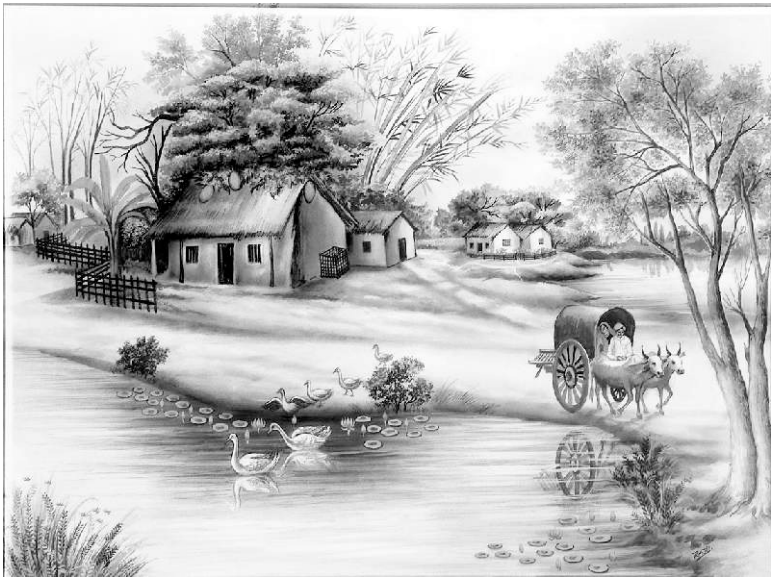

गाँव की कल्पना करने मात्र से एक मनोरम दृश्य दिखाई देता है। जहाँ की हवा में मिट्टी की सुगन्ध है, वातावरण में बैलों के गले के घुंघरु की आवाज है, हरा-भरा शान्त परिवेश है। ऐसा लगता है मानो प्रकृति माता की गोद में समा गए हैं। भारत का साहित्य, भारत के गीत और भारत की कलाकृतियाँ ऐसे गाँव के दृश्यों और विवरणों से भरा पड़ा है।

हमारे ऋषि-मुनियों ने गाँव की संरचना चिरस्थायी (sustainable) सिद्धांतों पर की थी। ग्राम की संरचना में जल, जमीन, जंगल, जानवर, जीव, पर्यावरण, स्वास्थ्य, संस्कार और

संस्कृति सभी का पूरा ध्यान रखा गया था। प्रकृति का शोषण नहीं, दोहन की व्यवस्था थी। प्रकृति को माता का स्थान दिया गया था।

इस व्यवस्था में तीन माताओं का योगदान महत्वपूर्ण है। पहली, घर की माता (गृहणी), दूसरी, धरती-माता और तीसरी गो-माता। इन तीनों से बनता था सुखी, स्वस्थ एवं सम्पन्न जीवन। घर की माता, भूमि-माता और गो-माता की सेवा करती थी, भूमि-माता अन्न-फल से घर की माता और घास-फूस से गोमाता का भरण पोषण करती थी, और गोमाता गोबर-गोमूत्र से भूमि-माता और दूध-दही से घर की माता का पालन करती थी। इस व्यवस्था में मनुष्य की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति हो जाती थी। यह व्यवस्था सनातन एवं चिरंतन व्यवस्था है। इसमें जीवन की पूर्णता है। इसमें शान्ति है।

प्रत्येक गाँव एक स्वतंत्र एवं स्वावलम्बी इकाई हुआ करता था। उस गाँव की जरुरत की सभी वस्तुएँ उस गाँव में ही उत्पादित होती थी। विचार करने पर पता चलता है कि प्राचीन शहर या नगरों की रचना भी गाँव के सहयोग की दृष्टि से ही कि गई थी। इससे गाँव का अतिरिक्त उत्पादन नगरों के माध्यम से पूरे देश और विश्व में पहुँचाया जाता था। **यानि शहर, गाँव का परिपूरक था, विकल्प नहीं।**

आज भी जब हम किसी के पैतृक स्थान के बारे में पूछते हैं तो 'कौन सा गाँव है?' ऐसा ही पूछते हैं न की 'कौन सा शहर है?'। कहने का तात्पर्य है कि कुछ वर्ष पूर्व तक भी भारत गाँव में ही बसता था, परन्तु पिछले कुछ वर्षों में यह चित्र तेजी से बदलता हुआ दिखाई दे रहा है। ●●●

शहरीकरण के दुष्परिणाम और गाँव के अस्तित्व पर संकट

वर्तमान समय में ग्राम और शहर के समीकरण में भारी परिवर्तन आया है। गाँव का पोषण करने के उद्देश्य से बनने वाले शहर अब गाँव का शोषण करने वाले बन गये हैं। **शहर अब गाँव का परिपूरक नहीं बल्कि गाँव का विकल्प बनने लगा है।** दोनों की आपस की दूरियाँ बढ़ती जा रही है। ऐसे में शहरीकरण की अंधी दौड़ में गाँव का अस्तित्व संकट में पड़ता जा रहा है। लोग ग्राम छोड़कर शहर की ओर भागने लगे हैं। यहीं से समस्याएं शुरु होती है। इसके अलावा वर्तमान शहरीकरण के अपने दुष्परिणाम हैं।

शहरीकरण के दुष्परिणाम

१. **प्रकृति से दूर, ईंट-पत्थर (मकानों) का जंगल** -(Jungle of concrete.) शहरों में जहाँ भी नजरें घुमाएंगे तो आपको इमारतें ही दिखाई देंगी। चारों ओर प्राणहीन मकान और अट्टालिकाएं। नाम मात्र के कुछ पेड़ दिखाई दे सकते हैं।

२. चारों ओर **प्रदूषण**। सभी प्रकार का प्रदूषण।

(क) वायु - सरकारी आंकड़े कहते हैं कि शहरों की हवा में सांस लेना जान लेवा हो गया है। कारण उसमें प्रदूषण की मात्रा सीमा से अधिक है। शहरवासियों में साँस की बीमारी बढ़ रही है।

(ख) जल - शहरों में पीने के पानी के श्रोत में भी कई प्रकार के हानिकारक तत्व पाए गए हैं जो मानव स्वास्थ्य के लिए घातक है। इसके कारण पीने का पानी खरीद कर पीना पड़ता है। नल का पानी अब पीने योग्य नहीं रहा। स्थिति ऐसी है कि शहर में

प्रदूषण का स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव

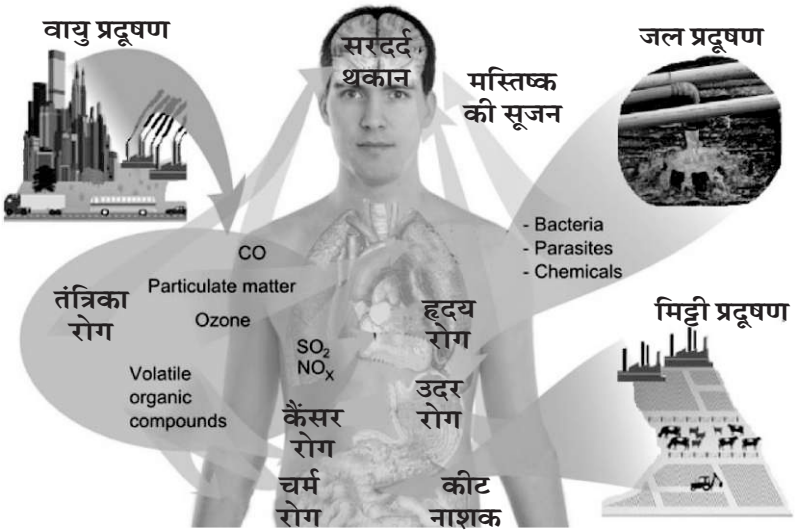

सभी के घरों में वाटर-फिल्टर अवश्य मिलेगा।

ग) खाद्य - भोजन भी जहरीला हो गया है। कई सर्वेक्षणों से यह सिद्ध हुआ है कि अनाज, फल सब्जी में रासायनिक कीट नाशक विष है। फल-सब्जी दिखने में सुन्दर और ताजा लगे इसके लिए बाजार में लाने से पहले उनको हानिकारक रासायनिक preservatives और रंगों में धोया जाता है। ऐसे विषाक्त आहार के सेवन से कई प्रकार के घातक रोग हो रहे हैं।

घ) दृश्य - शहर में चारों ओर आपको विज्ञापन दिखाई देगें। इनमें कई अभद्र चित्र होते हैं जो कि एक प्रकार का प्रदूषण ही है।

ड) ध्वनि - शहर में एक क्षण भी बिना शब्द के बिताना मुश्किल है। २४ घंटे गाड़ियों की पों-पों चलती रहती है। जहाँ देखो वही शोर। आंकड़े बताते हैं कि ध्वनि प्रदूषण इतना बढ़ गया है कि

उसके कारण बड़ी संख्या में लोगों को कानों में कम सुनने की बीमारी हो रही है।

३. **पर्यावरण का सर्वनाश** - सड़क, मकान आदि निर्माण कार्यों के लिए पेड़, तालाब आदि प्राकृतिक सम्पदाओं को नष्ट किया जाता है। आधुनिकता की होड़ में पर्यावरण का सर्वनाश किया जा रहा है।

४. **रोगमय जीवन** - प्रदूषण और तनावग्रस्त जीवनचर्या के कारण अधिकांश शहरवासी रोगग्रस्त है। अस्पताल में रोगियों की लम्बी कतारें लगी हैं। अधिकांश घरों में सिर्फ दवा के लिए एक आलमारी रखी मिलेगी।

५. **आपराधिक तत्वों की अधिकता** - शहरों में आपराधिक घटनाएँ अधिक होती हैं। इनकी संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही हैं। पुलिस भी इनको रोकने में असमर्थ है।

६. अधिक **खर्चीला जीवनयापन** - झूठी शान-शौकत और दिखावा यह शहर की पहचान बन गई है। इससे शहर में रहने वालों का जीवन अधिक खर्चीला बन गया है। सब पर किसी न किसी प्रकार का ऋण है।

७. **आर्थिक एवं सामाजिक विषमता** - शहर में कुछ लोग अधिक धनवान हैं तो कुछ लोग अत्यधिक गरीब। यहाँ आर्थिक विषमता की खाई बहुत गहरी है। साथ ही यहाँ सामाजिक समरसता का भी अभाव दिखाई देता है।

८. **यांत्रिकीकरण के साथ शहर वासी भी यंत्रवत हो गया है** - सुबह उठते ही ऑफिस जाने की जल्दी, धक्के खाते-खाते ऑफिस पहुँचना, दिनभर गधे की तरह मेहनत करना और रात को फिर धक्के खाते-खाते घर पहुँचना यही दिनचर्या बन गई है

अधिकांश शहरवासियों की।

९. **मानवीय मूल्यों का क्षय** - इस भाग दौड़ की जिन्दगी में दया, करुणा, प्रेम जैसे मानवीय मूल्यों के लिए जीवन में कोई स्थान नहीं। उदाहरण के तौर पर यदि सुबह ऑफिस जाने की जल्दी के समय में सड़क पर कोई इन्सान तकलीफ में पड़ा कराह रहा हो तो यकिन मानिये कि ९९ प्रतिशत लोग उसे देखकर भी अनदेखा कर देंगे, मदद करने की बात तो दूर।

१०. **गो-विरोधी व्यवस्था** - शहर में गाय के लिए कोई स्थान नहीं। उसके चरने के लिए कोई व्यवस्था नहीं। उसको हरा चारा नहीं मिलता। यदि शहर में कोई गाय रख भी ले तो उसे एक खूंटे से ही बंधा रहना पड़ता है।

११. **परिवारों में क्लेश, अशांति व तनाव** - शहरों में पारिवारिक क्लेश बढ़ रहें हैं। तलाक की भी घटनाएँ बढ़ रही हैं। बूढ़े माँ-बाप के लिए घर में और दिल में जगह नहीं। उनको वृद्धाश्रम में भेज दिया जाता है। मानसिक रोगियों की संख्या भी बढ़ रही। अवसाद (depression) एक महामारी का रुप ले रहा है।

१२. **अत्यधिक ऊर्जा की खपत** - शहरी व्यवस्था में ऊर्जा की अत्यधिक खपत होती है। गाँव की तुलना में प्रति व्यक्ति ऊर्जा की खपत शहर में कई गुणा अधिक है। इससे ऊर्जा के श्रोत जल्द समाप्त हो रहे हैं।

वर्तमान शहरीकरण के दुष्परिणाम पर ध्यान देने से पता चलता है कि शहर कभी भी ग्राम का विकल्प नहीं हो सकता। यहाँ तक की शहर के अस्तित्व के लिए भी ग्राम की आवश्यकता है। इसके अलावा शहरीकरण के दुष्परिणाम को समझने से यह भी पता चलता है कि गाँव का महत्व क्यों और कितना है।

लेकिन आज गाँव की संरचना को तोड़ने का और भारत के विनाश का कुटिल षड़यंत्र चलाया जा रहा है। गाँव के लोग उस षड़यंत्र का शिकार बनते जा रहे हैं। इस कारण आज गाँव की स्थिति वैसी नहीं रही जैसी आज से १५०-२०० वर्ष पूर्व थी। आज गाँव में समस्याओं का पहाड़ टूट पड़ा है।

गाँव की समस्याएं

एक समय गाँव समृद्ध हुआ करते थे लेकिन आज नहीं। आज गाँव में **गरीबी** दिखाई देती है। ग्रामवासी के पास रोटी, कपड़ा, मकान, चिकित्सा, शिक्षा जैसी मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए भी साधन नहीं है। कृषिकार्य में लाभ नहीं हो रहा। कई बार **कृषि कार्य में भारी नुकसान** का भी सामना करना पड़ता है। ऐसी स्थिति में खेती के लिए या अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कर्ज लेना पड़ता है। अधिकांश किसान **कर्ज** के बोझ से दबा हुआ है। पिछले १५ वर्षों में लगभग ३ लाख किसानों नें **आत्महत्या** की है। इन १५ वर्षों में १ करोड़ से अधिक किसान खेती छोड़ चुके हैं। खेती ही आजीविका का एकमात्र साधन होने के कारण, खेती छोड़कर **बेरोजगार** हो गए हैं। आज ग्रामवासी **कुपोषण** का शिकार है। उसको पर्याप्त पौष्टिक आहार नहीं मिलता। गाँव **रोगग्रस्त** होता जा रहा है। अनेक रोगों ने उसको घेर रखा है। कई बार रोगों की चिकित्सा में घर-जमीन बेचना पड़ जाता है। पंजाब से चल कर राजस्थान जाने वाली एक ट्रेन का नाम तो कैंसर ट्रेन पड़

गया क्योंकि उसमें अधिकांश यात्री कैंसर के रोगी होते हैं। जो गाँव शुद्ध जल-वायु के लिए जाना जाता था, आंकड़ों के अनुसार उन गाँवों में अब **प्रदूषण** बढ़ रहा है। इसके अलावा गाँव में **जल-संकट** खड़ा हो गया है। भारत के आधे से अधिक जिलों में जल का संकट है। साथ ही गाँव में भी **अपराध** की घटनाएँ बढ़ रही है। उनको नशीले पदार्थों के सेवन की आदत लग गई है। उनमें जुआ, बीड़ी, शराब, गांजा आदि की लत बढ़ रही है।

रोजगार की खोज में ग्रामवासी **शहर की ओर पलायन** कर रहे हैं। गाँव में खेती की जमीन बेचकर शहर में झोपड़ी में रहने को विवश है।

आज भारत की जनता दोहरी मार से जूझ रही है। एक ओर गाँव की अधोगति और दूसरी ओर शहर की समस्याएँ।

भारत गाँव में बसता है, शहर में तो इंडिया का वास है। यदि ऐसे ही शहरीकरण चलता रहा तो भारत, भारत नहीं इंडिया बन जायेगा। यदि भारत को इंडिया बनने से बचाना है तो भारत के गाँवों को बचाना होगा।

गाँव के अस्तित्व पर संकट,
यानि भारत के अस्तित्व पर संकट है।

●●●

गाँव की समस्याओं का कारण

किसी भी समस्या का समाधान ढूँढ़ने से पहले उस समस्या का कारण जानना जरुरी होता है। क्या कारण है कि जो भारत एक समय सोने की चिड़िया कहलाता था, वो भारत आज ऋण में डूबा हुआ है। क्या कारण है कि जो गाँव सुख समृद्धि का प्रतीक हुआ करता था, वह आज अंधेरे के गर्त में जाता जा रहा है।

इसका मुख्य कारण है विदेशी शिक्षा। पहले कहावत थी 'उत्तम कृषि, मध्यम वाणिज्य, अधम चाकरी।' विदेशी शिक्षा ने आज उसे उलट कर 'उत्तम चाकरी, मध्यम वाणिज्य, अधम कृषि' कर दिया है। विदेशी शिक्षा ने हमारा बहुत नुकसान किया है। उसने हमारी पारंपरिक खेती भुला दी, पारंपरिक चिकित्सा पद्धति को भुला दिया और भी कई पारंपरिक ज्ञान को भुला दिया है।

गाँव के विनाश में विदेशी शासन और फिर विदेशी भावना वाली देशी सरकार बहुत हद तक जिम्मेदार है। इन्ही सरकारों ने गाँव की व्यवस्था को तोड़ा है, देश को लूटा है। इन्होनें ही रासायनिक खेती को प्रोत्साहित किया, इसी सरकार नें विदेशी पशुओं को भारत में घुसाया है। **गाँव की उपेक्षा की गई और शहरीकरण को बढ़ावा दिया गया।** इन्ही कारणों से गाँव में समस्याएँ बढ़ी है।

विदेशी शिक्षा, प्रचार माध्यम और विज्ञापनों की चकाचौंध में फंस कर गाँव का किसान आज आत्महत्या करने को विवश है। खेती में नुकसान होने के कारण किसान कर्ज के भयंकर बोझ से दबा हुआ है। आज गाँव का व्यक्ति घातक रोगों से ग्रसित

है।

अंग्रेजी शिक्षा, रासायनिक खेती, अंग्रजी चिकित्सा, विदेशी दुधारु पशु जैसे, जर्सी, हॉल्सटीन, विदेशी रासायनिक प्रसाधन सामग्री और पेट्रोल डीजल के उपकरणों के प्रचलन के कारण गोवंश (गाय, बैल, सांड, बछड़ा, बछड़ी) की उपयोगिता कम होती गई और उसका ज्ञान भी लुप्त होता गया। फलस्वरुप गोवंश आर्थिक दृष्टि से अनुपयोगी हो गया और वह किसान के घर से निष्कासित होकर कसाईखाना पहुँच गया क्योंकि वर्तमान समय में सब कुछ धन की कसौटी में कस कर देखा जाता है।

'विनाश काले विपरीत बुद्धि'। हमारी बुद्धि इतनी भ्रष्ट हो गई है कि हमने पहले गोमाता को घर से निकाल दिया, फिर भूमि माता को बेच दिया और अन्त में घर की माता जिसने हमें जन्म दिया उसको भी वृद्धाश्रम भेज दिया।

जो गाय 'गोधन' कहलाती थी, हमारी अज्ञानता के कारण, वही हमें बोझ लगने लगी। वर्तमान समय में गाँव में गाय का उपयोग एवं महत्व कम होने से गाँव के किसानों में गोपालन के प्रति रुचि घट रही है। गहराई से समझने पर पता चलता है कि इन

समस्याओं के मूल में है गाय की महिमा का अज्ञान और गोवंश की अवहेलना। जिस गति से हमारे घर से गाय निष्कासित हो रही है, उसी गति से गाँव की दुर्दशा भी बढ़ रही है।

विनाश का चक्र कुछ इस प्रकार चला -

सबसे पहले हमने गाय को छोड़ा,
गाय के बाद हमने कृषि को छोड़ा,
कृषि के बाद हमने गाँव को छोड़ा,
गाँव के बाद देश को छोड़ा।

देवता भी जिस भूमि में जन्म लेने को तरसते हैं, उसी को छोड़ने में आज हम अपनी शान समझ बैठे। ऐसे में हर बार हम अपनी आत्मा से दूर जाते गये, क्योकिं,

विश्व की आत्मा है भारत,
भारत की आत्मा है गाँव,
गाँव की आत्मा है कृषि
और कृषि की आत्मा है गाय।

अत: विनाश के चक्र से बाहर निकलकर, विकास के चक्र को अपनाना चाहते हैं तो -

चलें गाँव की ओर, चलें गाय की ओर।

●●●

गाय ही क्यों ?

हमारे ऋषि-मुनि बहुत विद्वान थे। उन्होनें प्रकृति का गहन अध्ययन किया था। उसी अध्ययन के आधार पर उन्होनें गाय को माता का स्थान दिया। माँ का स्थान सबसे बड़ा होता है। माँ की बराबरी कोई नहीं कर सकता। गाय की महिमा अद्‌भूत और अद्वितीय है। यह सिर्फ इसी बात से सिद्ध होता है कि समस्त संसार में केवल गाय ही ऐसा प्राणी है जिसका मल, मल नहीं मल शोधक है। इसका गोबर-गोमूत्र हमारे लिए पूजनीय, पवित्र और बहु-उपयोगी है। हम मानते हैं कि गोबर में माता लक्ष्मी का वास है और गोमूत्र में माता गंगा का वास है। ऐसी विशेषता संसार के किसी अन्य प्राणी में नहीं, स्वयं देवताओं में भी नहीं।

गाय अखिल विश्व की माता है - 'गावो विश्वस्य मातरः'। गाय किसी एक सम्प्रदाय या किसी एक भू भाग के लोगों की ही माँ नहीं, बल्कि सबकी माँ है। वह सिर्फ मनुष्यों की ही नहीं बल्कि समस्त जीव जगत् व वनस्पतियों की भी माँ है।

जब हम कहते हैं कि मेरा गाँव मेरा तीर्थ है, तो गाय उस तीर्थ का भगवान है। जिस प्रकार भगवान के बिना तीर्थ का कोई महत्व नहीं, उसी प्रकार गाय के बिना गाँव का कोई महत्व नहीं।

गाय भारत के गाँव की आत्मा है। जिस प्रकार शरीर से आत्मा चली जाये तो शरीर निर्जीव हो जाता है, उसी प्रकार हमारे गाँव से गाय चली गई तो गाँव निर्जीव हो जायेगा।

शहर में गायों के लिए कोई स्थान नहीं है और यदि शहर में गाय ले भी आये तो उसे सुख नही मिलेगा अपितु कष्ट होगा। इसलिए गाय का उपयुक्त स्थान गाँव में किसान के घर पर ही है।

विश्व की आत्मा है भारत, भारत की आत्मा है गाँव,
गाँव की आत्मा है कृषि, कृषि की आत्मा है गाय।

गाय बचेगी तो कृषि बचेगी, कृषि बचेगी तो गाँव बचेगा,
गाँव बचेगा तो भारत बचेगा, भारत बचेगा तो विश्व बचेगा।

इसलिए विश्व को बचाना है तो गाय को बचाना होगा, और जो गाय को हानि पहुंचाता है, वह विश्व को हानि पहुंचाता है।

गाय कोई साधारण पशु नहीं, यह सृष्टि को परमात्मा का दिया हुआ वरदान है। गाय के बिना गाँव के उत्थान की कल्पना संभव नहीं और गाय के बिना भारतीय संस्कृति की कल्पना भी संभव नहीं।

एक बात समझना बहुत जरुरी है कि कृषि और

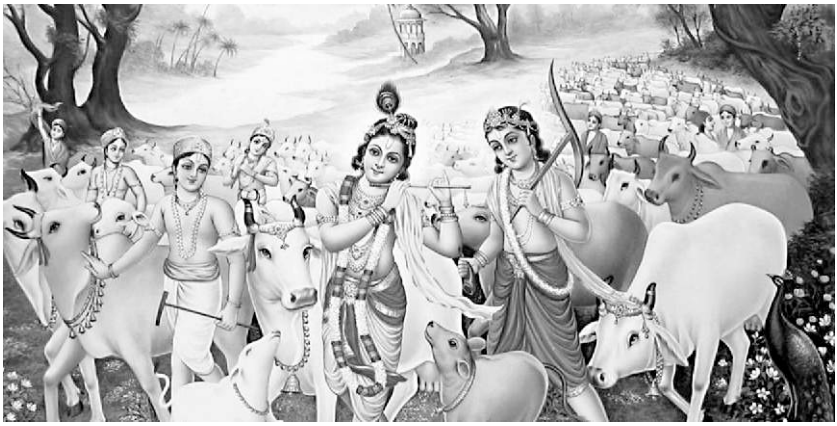

गोपालन साथ-साथ चलना चाहिए, कृषि बिना गोपालन और गोपालन बिना कृषि अधूरी है। जैसे बलराम और श्रीकृष्ण की जोड़ी। बलराम हल चलाते और श्रीकृष्ण गौ चराते। भगवान श्री कृष्ण ने गीता में इन दोनों कार्यों को धनोपार्जन का कार्य बताया है। अर्थात प्राचीन काल से कृषि और गोपालन आय का और हमारी अर्थव्यवस्था का आधार रहा है और उसी के बल पर भारत विश्व गुरु बना और सोने की चिड़िया कहलाया।

आज आधुनिक विज्ञान ने भी मान लिया है कि गोमूत्र में कई औषधीय गुण है। प्रमाण स्वरुप गोमूत्र को ५ (पांच) अन्तर्राष्ट्रीय पेटेंट प्राप्त हुए हैं। इनमें से ३ (तीन) मानव स्वास्थ्य में उपयोगिता के लिए और २ (दो) कृषि में उपयोगिता के लिए हैं।

जूनागढ़ विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक ने शोध कर बताया कि गोमूत्र में सोना (स्वर्ण) है। इस शोध के प्रकाशित होते ही पूरे विश्व में हलचल मच गई कारण ऐसा अन्य किसी प्राणी के मूत्र में सम्भव नहीं। इसलिए गाय को एक साधारण पशु मानना, यह मूर्खता है, अज्ञान है।

परमाणु वैज्ञानिक डा. मेन्नम मूर्ति ने गाय के आभा-मंडल (Aura) पर शोध किया और पाया कि गाय के शरीर से सकारात्मक ऊर्जा (Positive Energy) निकलती है और उसको स्पर्श करने वाले की नकारात्मक (Negative Energy) ऊर्जा को खींचकर नष्ट कर देती है। इसलिए गाय को स्पर्श करने से हमारी बीमारियाँ नष्ट होती है। उन्होनें पाया कि गाय एवं पंचगव्य में बहुत अधिक मात्रा में यह ऊर्जा होती है। उन्होनें प्रयोग कर सिद्ध किया कि गाय की परिक्रमा करने मात्र से कई रोग ठीक होते हैं, विशेषकर

मानसिक रोग।

उस परम वैभवशाली भारत को पुनः स्थापित करना है और उस ऐश्वर्य सम्पन्न भारत को पुनः प्राप्त करना है तो गो-आधारित ग्राम की स्थापना करनी होगी। जिस दिन भारत के सभी ग्रामवासी गो की महिमा को समझ कर उसे अपने घरों में स्थापित करेंगें, उस दिन भारत ऋण-मुक्त और रोग-मुक्त होकर स्वस्थ, सुखी और समृद्ध भारत बनेगा।

मातरः सर्वभूतानां गावः सर्वसुखप्रदाः

●●●

गो-आधारित ग्राम विकास के पाँच आयाम

गाँव की सभी समस्याओं का समाधान गोमाता के पास है। गोमाता से प्राप्त समाधान का ही नाम 'गो-आधारित ग्राम विकास' है।

गो-आधारित ग्राम विकास के पाँच आयाम है —

१. गो-आधारित कृषि
२. गो-आधारित अक्षय ऊर्जा
३. गो-आधारित मानव चिकित्सा व स्वास्थ्य
४. गो एवं कृषि आधारित ग्रामोद्योग
५. गो-संवर्धन, नस्ल सुधार एवं गो-चिकित्सा

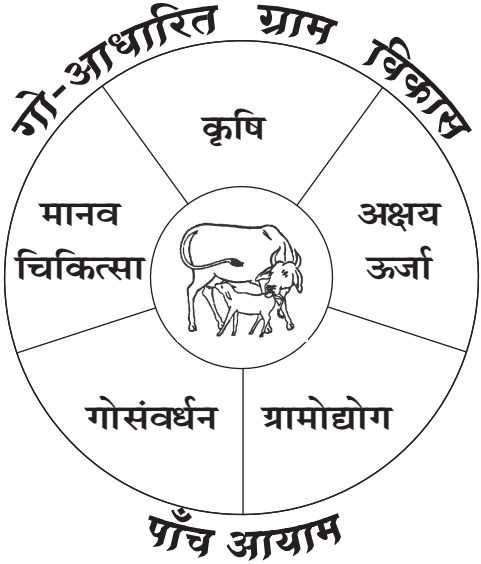

पहला आयाम

गो-आधारित कृषि

पुनः प्रमाणित हो गया है कि केवल गोवंश के आधार पर और बिना किसी अतिरिक्त व्यय के उन्नत और उत्तम कृषि कार्य किया जा सकता है। परीक्षणों से सिद्ध हुआ है कि खेत की मिट्टी तैयार करने से लेकर फसल की कटाई और भण्डारण तक गोवंश का महत्वपूर्ण योगदान तथा उपयोग है।

गो आधारित कृषि पद्धति को यहाँ विस्तार से बताया गया है जिससे कोई भी किसान इस पुस्तक को पढ़कर इस पद्धति को अपना सके।

इस पद्धति का मूल सिद्धांत यह है कि किसान के पास बीज अपना हो, खाद अपना हो, दवा अपनी हो, बैल अपना हो, बाजार अपना हो और श्रम अपना हो। इसको हमने कामधेनु कृषि पद्धति कहा है।

कामधेनु कृषि पद्धति

१. प्रत्येक कृषि कार्य **कृषि-पंचांग** के अनुसार करें। ऐसा करने से कई प्रकार के लाभ होते हैं।

२. प्रति एक एकड़ भूमि की सीमा पर औसतन ८ से १० पेड़ होने चाहिए। ऐसे पेड़ जिनकी छांव कम हो। इसके अलावा मेढ़ पर तुलसी के पौधे लगाने चाहिए। ये फसल को रोग से बचाता है।

३. खेत पर प्रतिदिन सुबह शाम **अग्निहोत्र** करें।

४. बोनी से ८ दिन पहले खेत में प्रति एकड़ में १५ किलो वटवृक्ष की मिट्टी बखेर दें। साथ ही अग्निहोत्र की भस्म ५ किलो बखेर दे।

५. बोनी से एक दिन पहले खेत में मटका खाद का उपयोग करें। साथ ही **समाधी खाद** / कम्पोस्ट खाद / **सींग खाद** भी डाला जा सकता है। खाद डालने के तुरंत बाद खेत को बैल चलित ट्रैक्टर से जोत दें।

६. बोनी से एक दिन पहले बीज को **बीजामृत** में उपचारित करें।

७. चार पत्ते आने पर **सिलिका खाद** का उपयोग करें।

८. प्रत्येक १५ दिनों में **मटका खाद**, **अग्निहोत्र भस्म**, **गोमूत्र कीट नियंत्रक** और **छाछ** का प्रयोग करें।

९. फूल आने पर पुन: सिलिका खाद का उपयोग करें।

१०. समय-समय पर निड़ाई-गुड़ाई करें और खर-पतवार से खेत का **आच्छादन** करें।

११. **फसल चक्र** और अन्तर्वर्ती फसल प्रक्रिया का ध्यान रखें।

अपना बीज - बीज उसे ही कहते हैं जिसमें सृजन क्षमता हो। प्रकृति की व्यवस्था में एक बार जो बीज हमें प्राप्त हो गया, उससे हम कई बीज पैदा कर सकते हैं। अपना स्वयं का बीज होना सच्ची स्वतंत्रता है। यदि बीज पर से हमारा नियंत्रण समाप्त हो गया तो भोजन पर से हमारा नियंत्रण समाप्त हो जायेगा। आज कई बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ बीज पर अपना एकाधिकार जमाना चाहती है। ऐसे बीज तैयार कर रही है जिससे दोबारा बीज नहीं बन सकता और किसान को हर बार बीज उस कम्पनी से खरीदना होगा। इस संकट को समझते हुए यह आवश्यक हो जाता है कि हम अपना देशी बीज सुरक्षित करें एवं उसका संवर्धन कर अधिकाधिक उसी का उपयोग करें। प्रत्येक गाँव का अपना बीज बैंक होना चाहिये। हर किसान के पास अपना बीज होना चाहिये। अपने बीज के बदले वह दूसरे किसान से दूसरा बीज ले सकता है, ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए।

अग्निहोत्र - सूर्योदय और सूर्यास्त के समय किया जाने वाला साधारण यज्ञ ही अग्निहोत्र कहलाता है। इसमें अग्निहोत्र पात्र, गोबर के कंडे, चावल (अक्षत) और घी की आवश्यकता होती है।

निर्धारित समय से ५ मिनट पहले गोबर का कंड़ा, घी और कपूर के माध्यम से अग्नि प्रज्वलित करें। २०-३० दाने चावल में २ बूँद घी मिलाकर दो भाग कर लें। अग्नि प्रज्वलित होने पर ठीक समय पर ये दो आहुति दो मन्त्रों के साथ अग्नि को समर्पित करें।

सूर्योदय का मंत्र

१) सूर्याय स्वाहा, सूर्याय इदं न मम

२) प्रजापतये स्वाहा, प्रजापतये इदं न मम

सूर्यास्त का मन्त्र

१) अग्नये स्वाहा, अग्नये इदं न मम

२) प्रजापतये स्वाहा, प्रजापतये इदं न मम

अग्निहोत्र खेत के बीच में करना सर्वोत्तम है। अन्यथा खेत के किसी भी कोने में किया जा सकता है। २०० एकड़ तक के खेत के लिए एक अग्निहोत्र पर्याप्त है।

अग्निहोत्र करने से खेत की उर्वरा शक्ति बढ़ती है। इससे खेत में केचुओं की संख्या बढ़ती है। खेत में रोग और कीट के प्रभाव को भी कम करता है।

अग्निहोत्र भस्म को सुरक्षित एक मिट्टी के बर्तन में संग्रह करें। इसका उपयोग मिट्टी की उर्वरता के लिए, बीजोपचार के लिए, फसल रक्षक के रुप में और अन्न भण्डारण को कीड़ों से बचाने में किया जाता है। अन्न भण्डारण के लिए १ प्रतिशत भस्म मिलाएँ अर्थात १०० किलो अन्न में १ किलो अग्निहोत्र भस्म मिला कर भण्डारण करें।

अग्निहोत्र भस्म मानव चिकित्सा में भी लाभकारी है। गो-आधारित मानव चिकित्सा में इसका उल्लेख है।

मटका खाद / जीवामृत / अमृतपानी - १५ किलो गोबर, १५ लीटर गोमूत्र, १५ लीटर पानी, ५०० ग्राम गुड, और २५० ग्राम

बरगद (वटवृक्ष) के पेड़ के नीचें की मिट्टी एक मटके में मिलाकर मुंह जूट के बोरे से ढ़क दें। घोल को चार दिन तक, दिन में दो बार लकड़ी से सीधा-उल्टा घुमाएँ। पांचवे दिन ४ गुना पानी मिलाकर जमीन में छिडकाव करें। यह मात्रा एक एकड़ के लिए पर्याप्त है।

बीजामृत - १ किलो गोबर, १ लीटर गोमूत्र, १० लीटर पानी २० ग्राम ठंडा किया हुआ कलि का चूना मिलाकर घोल बना लें। २४ घण्टे बाद इस घोल में बीज उपचारित करें। यह मिश्रण १० किलो बीज उपचारित करने के लिए पर्याप्त है।

गोमूत्र, नीम, लहसुन और तांबा से कीट नियंत्रक - २० किलो गोमूत्र में ५ किलो हरे नीम पत्ते, ५०० ग्राम लहसुन और एक तांबा का टुकड़ा डालकर मटके में भरकर मुंह बंद कर रख दें। २१ दिन बाद खोलें। छान कर किसी जार में भरकर रख दें। १ लीटर कीटनियंत्रक के साथ ५० लीटर पानी मिलाकर छिडकाव करें। (५० गुणा पानी मिलाना)

छाछ (मट्ठा/तक्र) - ५ से ५० दिन की सड़ी हुई छाछ एक शक्तिशाली रोगनाशक है। १ लीटर छाछ में ४० लीटर पानी मिलाकर छिड़काव करें। (४० गुणा पानी मिलाना)

चार(४) पिट कम्पोस्ट पद्धति - खेत और घर के जैव कचरे से खाद बनाने की यह सरल पद्धति है। ५ फीट लम्बा ५ फीट चौड़ा और २.५ फीट ऊंचा इंट का टांका बनाये। बीच से उसमें चार भाग (+) का विभाजन करें। विभाजन की

दीवार पर थोड़ी थोड़ी दूर पर छिद्र रखें। इस प्रकार टंकी में ४ भाग हो जायेंगे। नीचे दिए हुए चित्र से समझें। टंकी के निचले भाग में कुछ भी नहीं करना है। उसमें भरा जाने वाला कचरा मिट्टी के सम्पर्क में रहना चाहिये जिससे जमीन के नीचे से केचुएँ आना-जाना कर सकें। प्रतिदिन का कचरा एक भाग में भरना शुरु करें। साथ में थोड़ा गोबर का घोल या बायो गैस की स्लरी मिलाएं। २० से २५ दिनों में पहला भाग भरे उतना कचरा प्रतिदिन डालें। २५ दिनों बाद पहला भाग पूरा भरने पर उसे पाट की बोरी से ढ़ँक दे और नमी बनाए रखें। उसके बाद दूसरे भाग को भरना प्रारंभ करें। इस प्रकार चारों भाग भर दें। चौथा या अंतिम भाग भरने तक पहले भाग का कचरा, खाद में परिवर्तित हो जायेगा। इसे बोरी में भरकर रख दें। नमी बनाए रखें। उस भाग को खाली कर फिर उस में कचरा भरें। इसी प्रकार यह चक्र चलता रहेगा और खेत के लिए उत्तम खाद मिलता रहेगा। इसके साथ-साथ घर और गाँव में स्वच्छता भी बनी रहेगी। यह एक प्रकार से कचरा प्रबंधन भी है। (wealth from waste)

समाधि खाद - गाय की मृत्यु होने पर उसका चमड़ा उतारे बिना उसे अपने खेत में ही समाधि दे दें। पांच फुट लम्बा, चार फुट चौड़ा, चार फुट गहरा गड्ढा खोदें। उसमें ४ इंच गीला गोबर बिछा दें फिर मृत गोमाता को गड्ढें में सुला दें, ऊपर से ५० किलो मोटा नमक डाल दें, फिर एक फुट तक गीला गोबर बिछा दें, फिर मिट्टी डालकर गड्ढा बंद कर दें। उसमें पानी नहीं जाना चाहिए, शरीर सड़ना नहीं चाहिए, गलना चाहिए। साल भर बाद उस गड्ढे की मिट्टी एक सुगन्धित खाद बन जाएगी। कुछ हड्डियाँ व सींग बचेंगे उन्हे अलग कर लें। यह खाद वर्षा होने पर या खेत में पानी देकर

एक एकड़ में बखेर दें। यह खाद बंजर भूमि को भी उपजाऊ बना देगा। फलदार वृक्षों में डालने पर बहुत अधिक फल प्राप्त होगें।

सींग खाद - शरद पूर्णिमा के दिन मृत गाय के खाली सींग के खोल में दूध देने वाली गाय का गोबर भरकर १८ इंच गहरा गड्ढा खोद कर मोटा सिरा नीचे रखते हुए जमीन में गाड़ दें। नुकीला सिरा दो इंच हवा में खुला रखें। पके हुए गोबर खाद व मिट्टी से गड्ढा भर दें। नमी बनाये रखें। चैत्र पूर्णिमा को खोद कर निकाल लें। एक साथ कई सींग गाड़ सकते हैं। इस खाद को किसी मिट्टी के घड़े में ठंडी जगह में रखें। नमी बनाये रखें।

उपयोग विधि : १३ लीटर पानी में ३० (तीस) ग्राम सींग खाद मिलाकर एक घंटे सीधा व उल्टा भंवर बनाये तथा झाड़ू से एक एकड़ में बोनी की पूर्व संध्या पर छिड़कें। दूसरी बार चार पत्ते होने पर छिड़कें।

सिलिका खाद - चैत्र पूर्णिमा के दिन सिलिका (चकमक पत्थर) का चूर्ण को रोटी के आटे की तरह गूंदकर मृत गाय के खाली सींग के खोल में भरकर रखें। कुछ समय बाद अतिरिक्त पानी ऊपर आ जायेगा। उसे निकाल दें और सिलिका चूर्ण भर दें। फिर १५ इंच का गहरा गड्ढा खोद कर सींग का मोटा सिरा नीचे रखते हुए जमीन में गाढ़ दें। नुकीला सिरा दो इंच हवा में खुला रखें। पके हुए गोबर खाद व मिट्टी से गड्ढा भर दें। नमी बनाये रखें। आश्विन नवारात्रा में

निकालें। इस खाद को किसी मिट्टी के घड़ें में ठंडी जगह में रखें, नमी बनाये रखें।

उपयोग विधि : १३ लीटर पानी में १ (एक) ग्राम सिलिका खाद मिलाकर एक घंटे सीधा व उल्टा भंवर बनाये। चार पत्ते की फसल पर स्प्रे नोजल का मुंह ऊपर कर महीन फुआर के रुप में सूर्योदय के समय उडाये, दूसरी बार छिड़काव फलों के विकास के समय करें।

आच्छादन - पौधों से गिरने वाले पत्तों को उन्हीं की जड़ों में डाल देना चाहिये। उस पर मेढ़ की मिट्टी डाल देनी चाहिए। खरपतवार को भी बाहर नहीं फेंकना चाहिए। खेत में ही डाल दें। इससे मिट्टी में नमी बनी रहती है, देशी केंचुओं को पनपने और पौधों के लिए भोजन बनाने में सुविधा रहती है। सिंचाई में भी बचत होती है।

फसल चक्र के सिद्धान्त -

१. गहरी जड़ वाली फसल के बाद उथली जड़ वाली फसल बोनी चाहिए।
२. दलहनी के बाद अदलहनी फसल लगाना चाहिए।
३. अधिक पोषण माँग वाली फसल के बाद कम पोषण माँग वाली फसल लगाना चाहिए।
४. अधिक पानी चाहने वाली फसलों के बाद कम पानी वाली फसलें लगाये।
५. हरी खाद के लिए हरी खाद देने वाली फसलें उगायें।
६. बाजार की आवश्यकता के अनुसार फसल चक्र का निर्धारण करें।

कृषि पंचांग - प्रति वर्ष कृषि पंचांग प्रकाशित होता है। उसको संग्रह करें और उपयोग करें। इसके मुख्य सिद्धान्त निम्नलिखित हैं।

१. खेत की तैयारी जुताई, खाद बनाना, खाद को खेत में डालना, पौधों का रोपन (ट्रान्सप्लान्ट) वृक्ष की कटाई	चन्द्रमा के दक्षिणायन पक्ष (Descending Moon) में करना चाहिए।
२. बीज की बुआई (Sowing)	शनि-चन्द्रमा आमने-सामने के समय पूर्णिमा के ४८ घण्टे पूर्व चन्द्र के उत्तारयम पक्ष में उचित राशि के अनुसार
३. कटाई-तुड़ाई (Harvesting)	चन्द्रमा जब वायु तत्व (मिथुन, तुला, एवं कुम्भ राशियों) में हो। चन्द्रमा जब अग्नि तत्व (धनु, मेष एवं सिंह) में हो तब यह कार्य करना चाहिए। ध्यान देना चाहिए कि पूर्णिमा के समय कटाई/तुड़ाई न करें, क्योंकि वातावरण में अधिक नमी होने के कारण कवक एवं अन्य सूक्ष्म जीवों के प्रकोप की सम्भावना अधिक होती है।

	जड़ वाली फसलों की तुड़ाई/कटाई चन्द्र दक्षिायान पक्ष में ही करनी चाहिए पत्ती, बीज एवं फब वाली फसलों की कटाई/तुड़ाई चन्द्र के उत्तरायण पक्ष में करनी चाहिए।
४. कटाई/छटाई	फलदार वृक्षों की कटाई-छटाई से वृक्ष स्वस्थ तो रहते ही हैं उनकी फलत में भी बढ़ोत्तरी होती है। कटाई-छटाई प्रक्रिया का उचित समय निम्नवत् है - चन्द्र जब अग्नि तत्व (धनु, मेष व सिंह राशि में हो। पूर्णिमा के समय चन्द्र के दक्षिणायन पक्ष में फूलदार वृक्षों की कटाई/छटाई का उचित समय चन्द्र के वायु तत्त्व की स्थिति (मिथुन, तुला व कुम्भ राशियों) में होती है।
५. फफूँदी या अन्य सूक्ष्म जीवों जनित रोगों की	इसका उचित समय शनि-चन्द्र आमने-सामने की स्थिति होती है इस विशेष दिन रोगी फसल या

रोकथाम	पौध पर संतुलित छिड़काव करें। पूर्णिमा के समय भी रोगों को रोकथाम का कार्य प्रभावी रुप से किया जा सकता है।
६. ग्राफ्टिंग	नर्सरी कार्यों में ग्राफ्टिंग का कार्य होता है। चन्द्र के उत्तारायण पक्ष में ग्राफ्टिंग करना उपयुक्त होता है।
७. आलू की बुआई	चन्द्रमा पृथ्वी से अतिदूर समय में आलू की बुआई करने से फसलोत्पादन एवं गुणवत्ता में बढ़ोत्तरी होती है।

इस प्रकार गो-आधारित कृषि अपनाने से गाँव का करोड़ो रुपये जो रासायनिक खाद एवं कीटनाशक खरीदने में व्यय होता था, वह बचेगा। खेती सस्ती होगी तो खेती से लाभ बढ़ेगा। किसान कर्ज मुक्त होगा।

●●●

दूसरा आयाम

गो-आधारित अक्षय ऊर्जा

ऊर्जा हमारे जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं में से एक है। आज हम बिजली और गैस के बिना जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते। आज पूरा विश्व भूमिगत ऊर्जा संसाधनों की खोज में बेचैन है। उसे संसाधनों के समाप्त होने की चिन्ता सताती रहती है। इसलिये कोयला, गैस और तेल के नये-नये भण्डारों की तलाश में बड़ी-बड़ी ताकतें लगी हुई है। जहाँ कोयला और पेट्रोल के भंडारों की सीमा है, वहीं गोवंश के माध्यम से हमें सुगमता पूर्वक, आजीवन, पर्याप्त अक्षय ऊर्जा प्राप्त हो सकती है और वह भी प्रदूषण रहित। सिर्फ, इसको प्राप्त करने का उपाय करना होगा।

गोबर गैस : ईंधन का यह सर्वोत्तम एवं सरलतम स्त्रोत है। इसके लिए सर्वप्रथम हर गाँव के हर घर में गोबर गैस संयंत्र का निर्माण हो। इससे हर घर में रसोई बायोगैस से बन सकेगी।

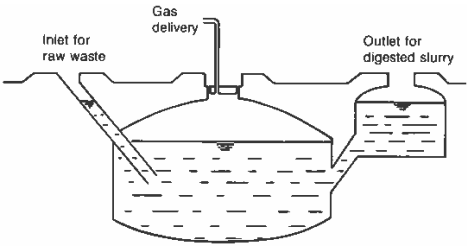

बायोगैस के निर्माण में खादी ग्रामोद्योग की ओर से अनुदान भी दिया जाता है। अधिक जानकारी आगे दी गई है।

रसोई की आवश्यकता से अधिक बायोगैस उत्पादन

होने पर बायोगैस से चलने वाला जनरेटर लगाकर बिजली पैदा की जा सकती है। इससे गाँव का ईंधन और बिजली गाँव में ही तैयार किया जा सकता है।

बायोगैस संयंत्र में गोबर के साथ गोमूत्र और अन्य जैव कचरा भी डाला जा सकता है। इससे गैस का उत्पादन ज्यादा होगा

बायोगैस संयंत्र से गैस के अलावा निकलने वाली स्लरी (पका हुआ गोबर का घोल) एक उत्तम खाद है जिसे सुखाये बिना सीधे खेतों में डाला जाना चाहिए या सूखे कचरे से कम्पोस्ट बनाने में उपयोग किया जाना चाहिये।

बैल चालित ट्रैक्टर

साधारण हल से खेती की तुलना में बैल चालित ट्रैक्टर से खेती में समय और मेहनत दोनों की बचत होती है। डीजल मोटर से चलने वाले ट्रैक्टर के बदले बैल चालित ट्रैक्टर का उपयोग प्रचलन में लाना होगा। इससे डीजल की खपत कम होगी और गाँव का धन गाँव में ही रहेगा।

बैल चालित परिवहन

बैल से चलने वाले मालगाड़ी का उपयोग बढ़े इसके लिए उसको आधुनिक बनाया

गया है। आधुनिक डिजाइन और तकनीक से बने इस मालगाड़ी में कम ताकत और तेज गति से माल ले जा सकेंगे। इसकी माल ढोने की क्षमता भी दुगनी है। बैलों को खींचने में शक्ति कम लगानी पड़ेगी। गाँव में नजदीक का परिवहन (मनुष्य और माल दोनों का) बैलों से होगा तो डीजल पर निर्भरता घटेगी, धन बचेगा, प्रदूषण घटेगा।

बैल चालित उपकरण

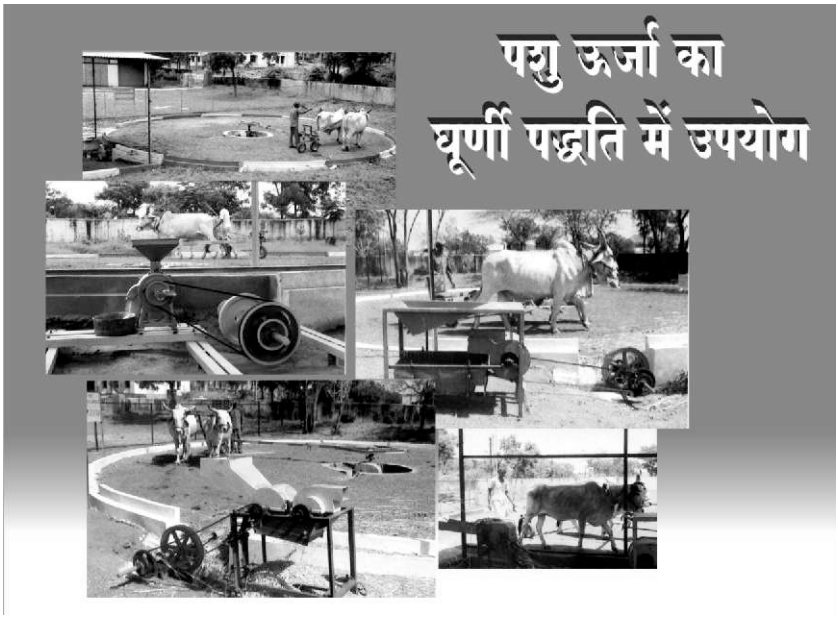

बैल से चलने वाले कई उपकरण तैयार किये गए हैं जैसे आटा चक्की, कुट्टी मशीन, तेल की घानी, पानी का पंप इत्यादि, इनके उपयोग से कई काम बैलों से किया जा सकेगा। बैलों को काम मिलेगा तो किसान की आय बढ़ेगी।

बैल चालित जनरेटर

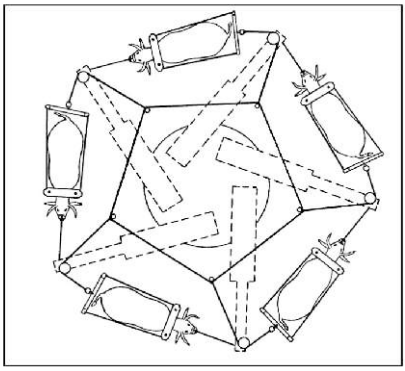

बैल के घुमने से बिजली का उत्पादन हो सकता है ऐसे प्रयोग हुए हैं। उनको हर गाँव में क्रियान्वित करना होगा। इससे गाँव की बिजली गाँव में ही तैयार की जा सकेगी।

शवदाह में गोबर का उपयोग

अंतिम संस्कार में लकड़ी के बदले केवल गोबर के कंडो का ही उपयोग किया जाना चाहिए। इससे ना सिर्फ कंडो का उपयोग बढेगा, बल्कि पेड़ कटने से बचेंगे, जिससे पर्यावरण बचेगा, धरती बचेगी।

इस प्रकार गोधन का ऊर्जा के क्षेत्र में सदुपयोग होने से भारत की निर्भरता विदेशी या आयातित पेट्रोल व डीजल पर कम हो जाएगी। इससे दो लाभ होंगे, पहला, देश का लाखों करोड़ों का धन बचेगा, दूसरा, प्रदूषण कम होगा। हर गाँव में सस्ती गैस और बिजली उपलब्ध हो पायेगी। गैस और बिजली पर दी जाने वाली सरकारी अनुदान राशि नहीं देनी होगी, जिससे सरकारी कोष पर से बोझ घटेगा।

●●●

तीसरा आयाम

गो-आधारित मानव चिकित्सा

'गोमाता एक चलता-फिरता औषधालय है।' गोमाता का पंचगव्य अमृत समान है और मनुष्य को बल, बुद्धि और स्वास्थ्य देने वाला है। यह सभी रोगों की दवा है। अज्ञानवश हम उसका उपयोग नहीं करते और इधर-उधर की ठोकरें खाते रहते हैं।

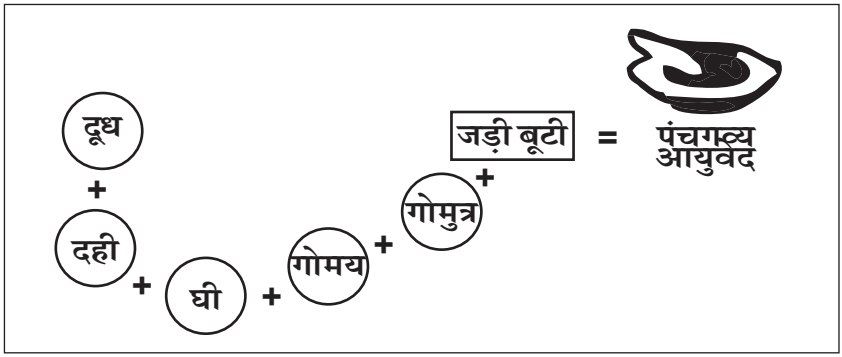

गो-आधारित चिकित्सा पद्धति अत्यंत सरल और सुगम है। कोई भी व्यक्ति इसे अपना कर रोगों से मुक्ति पा सकता है।

गाँव का अपना एक वैद्य होना चाहिये जिसे पंचगव्य आयुर्वेद चिकित्सा का प्रशिक्षण दिया जायेगा। ऐसे प्रशिक्षित वैद्य के परामर्श से ग्राम वासियों की चिकित्सा की जायेगी।

पंचगव्य = देशी गाय का दूध, दही, घी, गोबर (गोमय) और गोमूत्र

स्वस्थ व्यक्ति प्रतिदिन निम्न प्रयोग करे तो सदा निरोगी रह सकता है -

१. सुबह-शाम २५ मिली गोमूत्र का सेवन करें। (गर्भावस्था प्रेगनेंट लेडीज, ५ साल से कम उम्र वाला बच्चा, कमजोरी के रोगी, अल्सर, अम्लता (एसिडिटी) वाले रोगियों को वैद्य की सलाह के अनुसार गौमूत्र या गौमूत्र अर्क का सेवन करना है।)

२. प्रतिदिन गोमाता की ९ परिक्रमा करें। उसकी पीठ पर हाथ फेरें।

३. रात को सोने से पहले नाक और नाभि में घी की दो-दो बूँद डालें।

४. दांतों को गोमय दन्तमंजन से साफ करें।

५. नहाने में गोमय साबुन व गोमूत्र का उपयोग करें।

६. प्रतिदिन अग्निहोत्र करें।

७. पीने के पानी में अग्निहोत्र की भस्म डालकर पीयें।

८. शाकाहार करें, मांसाहार का सर्वथा त्याग करें।

९. कामधेनु कृषि पद्धति द्वारा उत्पादित अन्न का ही सेवन करें।

१०. देशी गाय के दूध, दही, घी का ही सेवन करें।

घर की बाहरी दीवारों को गोबर से लीपने पर रेडियो विकिरण के दुष्प्रभाव से बचाव होता है।

रोग का नाम	गो-आधारित चिकित्सा विधि
कान के रोग	गोमूत्र गुनगुना गर्म कर २ बूंद कान में डाले
नाक के रोग	नाक में घी २-२ बूँद (सोते समय)
दांत के रोग	गोमय दंतमंजन का उपयोग और गोमूत्र से कुल्ला
आँख के रोग	गोमूत्र में पानी मिलाकर आँखों में डालें। नाक में घी दो-दो बूँद (सोते समय)
चर्म रोग	गोबर-गोमूत्र का लेप लगायें, ३० मिनट धूप में बैठें, फिर धो लें
उदर (पेट) के रोग	गोमूत्र का सेवन, २५ मिली सुबह-शाम।
जोड़ों का दर्द	गरम गोमूत्र से सेक, गोबर का लेप
कमर दर्द	गोबर का लेप और गोमूत्र सेवन
त्रिदोष (वात, पित, कफ)	नाक और नाभि में दो दो बूँद घी रात को सोते समय
किडनी के रोग	गोमूत्र का सेवन, २५ मिली सुबह-शाम
हृदय रोग	गोमूत्र का सेवन
मधुमेह	गोमूत्र का सेवन
सर्दी जुकाम	नाक और नाभि में दो दो बूँद घी

रोग का नाम	गो-आधारित चिकित्सा विधि
बुखार	१० मिली गोमूत्र, साथ में २.५ग्राम सेंधा नमक बुखार उतरने तक प्रत्येक एक घण्टे बाद देना। ५० ग्राम पानी के साथ।
ब्लड प्रेशर	नाक और नाभि में दो दो बूँद घी (सोते समय)
अनिद्रा	नाक और नाभि में दो दो बूँद घी
स्लिप डिस्क	पेट के बल लेट जाएँ। प्रभावित स्थान पर ताजा गोबर का मोटा लेप करें। एक घंटे तक रखें। १५ दिन तक करें।
डिप्रेशन	नाक और नाभि में दो दो बूँद घी, गो की परिक्रमा
लीवर के रोग	गोमूत्र का सेवन, २५ मिली सुबह-शाम
पीलिया	गोमूत्र का सेवन. २५ मिली सुबह-शाम
मोटापा	गोमूत्र का सेवन, २५ मिली सुबह-शाम
एसिडिटी अल्सर, पेंपटिक अल्सर	१ग्लास दूध में २ चम्मच घी और मिश्री मिलाकर पीयें।
प्रसव के लिए	५० ग्राम गोबर का रस व ५ तुलसी पत्ते का रस।

रोग का नाम	गो-आधारित चिकित्सा विधि
रुपवान व गुणवान संतान के लिए	गर्भावस्था के ८ माह प्रतिदिन चांदी के बर्तन में जमाया हुआ दही का सेवन।

सावधानी

पंचगव्य स्वस्थ देशी (भारतीय) गाय का ही होना चाहिए। गाय गर्भवती नहीं होनी चाहिए। बछिया का गोमूत्र सर्वोत्तम होता है। चरने वाली गाय का ही गोमूत्र औषधि के रुप में उपयोगी है। पीने के लिए गोमूत्र को ८ परत साफ सूती कपड़े से तीन बार छान कर उपयोग में ले। नीचे गिरा हुआ गोमूत्र पीने के लिए ना लें। गोमूत्र खाली पेट लें और उसे लेने के बाद एक घंटा तक कुछ न खाएं। सामान्य मात्रा २५ मि.लीटर सुबह, शाम। बच्चों को सामान्य मात्रा से आधी मात्रा देना चाहिए।

घी को दही से मथ कर ही निकालना होता है। दूध से या दूध की मलाई से निकाला हुआ घी उपकारी नहीं होता।

नाक में घी डालने का नियम - घी को हल्का गर्म कर लें। तकिया हटा लें। दोनों नासिका में दो-दो बूँद डालें, अन्दर जाने दें। खींचना नहीं है।

गोमय (गोबर) रस निकालने की विधि :-

ताजा गोबर और पानी सम भाग मिलाएँ। उसे साफ सूती कपड़े से बाँधकर लटका दें। उसके नीचे स्टील का साफ बर्तन रख दें। उसमें रस एकत्रित होगा। सेवन के लिये ताजा रस का ही उपयोग करें।

गो आधारित चिकित्सा पद्धति अपनाने से एलौपैथी पर होने वाला करोड़ों का खर्च बंद होगा, देश का धन बचेगा।

●●●

चौथा आयाम

गो एवं कृषि आधारित ग्रामोद्योग

गो व कृषि आधारित ग्रामोद्योग की संभावनाएं दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। कम से कम गाँव वाले अपने उपयोग के उत्पाद स्वयं बनाये। बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के उत्पाद का उपयोग न करें। गाँव का पैसा विदेशी कम्पनियों के पास नहीं जाये इसके लिए ग्रामोद्योग की स्थापना करना आवश्यक है। इसके लिए कोई भारी निवेश की आवश्यकता नहीं। सिर्फ थोड़ी इच्छा शक्ति एवं प्रशिक्षण की जरुरत है।

पंचगव्य व कृषि आधारित कई उत्पाद तैयार किये जा सकते हैं जैसे -

१. खाद
२. कीट-नियंत्रक
३. पंचगव्य औषधि
४. गोमय साबुन
५. गोमय दंतमंजन
६. गोमूत्र अर्क
७. गोमूत्र घनवटी
८. गोमय भस्म बर्तन धोने का पाउडर
९. गोमय पूजा धूप
१०. गोमूत्र फिनायल
११. शैम्पू
१२. घी
१३ हवन के कंडे
१४. मच्छर भगाने का कोइल
१५. आटा चक्की से आटा उत्पादन
१६. तेल की घानी
१७. आचार
१८. पापड़
१९. मसाला
२०. शरबत
२१. मधुमक्खी पालन से शहद

उत्पादन विधि:

१. कामधेनु साबुन

गोमय (ताजा)-१२५० ग्राम, शुद्ध गेरु-२००ग्राम, मुलतानी मिट्टी-१००० ग्राम, कपूर-६०ग्राम, नीमपत्र (हरा)-२००ग्राम, पानी-१० लीटर, तिल तेल-१००ग्राम, गोमय स्वरस-२००ग्राम, शंख पावडर-५० ग्राम आवश्यकता अनुसार

साबुन पावडर निर्माण :

मुलतानी मिट्टी साफ कर, छोटे-छोटे टुकड़े कर पल्वराइझर में डाल पावडर बनाये कपड़े से छान ले, गेरु को भी पल्वाइझर में पावडर कर कपड़ा से छान ले। अब मुलतानी मिट्टी, गेरु, गोमयको हाथ से मसल कर मिश्रण करें। यह मिश्रण को ताप में सुखा दें। सुखने के बाद पल्वराइझर में पावडर कर कपड़े से छान कर रख लें।

गोमय स्वरस निर्माण :

२०० ग्राम गोमय मे २०० ग्राम पानी मिला के अके रस कर कपड़े से छान ले २०० ग्राम गोमय स्वरस प्राप्त होगा।

साबुन तेल निर्माण :
लाहे की कढ़ाई में १०० ग्राम तिल तेल गरम करे, जब तक झाग आवे तब तक, गरम तेल में २०० ग्राम गोमय स्वरस डाले। धीमी आँच से गरम करे। गोमय स्वरस जलके (तड तड आवाज आना बंध हो) जब तेल काले रंग का हो जाय, तब तेल सिद्ध हुआ समझे। गरम-गरम तेल को कपड़ा से छान ले। उसमें कपूर मिला ले। तेल परीक्षण करने हेतु बाती तेलवाली कर सुलगावें। आवाज बिना जले तो समझो के तेल सिद्ध हुआ है।

नीम काढ़ा का निर्माण :
नीम पत्र पानी में डाल आधा रहे तब तक उबाले। बाद में कपड़े से छान कर भर लें।

साबुन निर्माण :
१ किलो साबुन पावडर एवं १०० ग्राम साबुन तेल में आवश्यकता अनुसार नीम का काढ़ा मिलाकर आटा की तरह गोन्द ले। उसे साबुन की डाय में डाले साबुन तैयार करें। पहले २४ घंटे छाँव में सुखाये। बाद में ताप में सुखायें। पीछे ७-८ दिवस बाद फिर सुखावे। ऐसा ३-४ बार करे। सुखा साबुन शंख पावडर लगाकर ७५ ग्राम की पैकिंग करे।
उपयोग : प्राचीन पद्धति से बना यह साबुन वनसत्व युक्त, उत्साहवर्धक, कांतिवर्धक, तंदुरस्ती बढानेवाला और कई प्रकार के चर्म रोगों का नाश करने वाला है।

२. कामधेनु उबटन

गोमय (सूखा) चूर्ण-१५०ग्राम, शुद्ध गेरु-१५०ग्राम, मुलतानी मिट्टी-५००ग्राम, शतावरी चूर्ण-३०ग्राम, वचा चूर्ण-८०ग्राम,

कपूरकाचली चूर्ण-२०ग्राम, हल्दी चूर्ण-२०ग्राम, हरड चूर्ण-५०ग्राम

उबटन पावडर निर्माण :
मुलतानी मिट्टी साफ कर, छोटे-छोटे टुकड़े कर पल्वराइझर में पावडर बनावे, कपड़े से छान ले, गेरु को पल्वराइझर में पाउडर कर कपड़े से छान ले, अब मुलतानी मिट्टी, गेरु, गोमय को हाथ से मसल के मिश्रित करें। इस मिश्रण को ताप में सुखा दे, सूखने के बाद पल्वराइझर में पावडर कर, कपड़े से छन ले। जिसमें शतावरीचूर्ण, वचा चूर्ण, कपूर काचली चूर्ण, हल्दी चूर्ण और हरड चूर्ण को मिश्रित करे, फिरसे कपड़े से छान ले, यह उबटन तैयार हुआ। ५०ग्राम की पैकिंग करें।
उपयोग : त्वचा को चमकदार, तंदुरस्त, कांतिवर्धक बनाने के लिए यह उबटन वेद कालीन प्रचलित पद्धति से बनाया गया है।

३. केशनिखार शैम्पु :
गोमूत्र-१०लीटर, अरीठा (बीज बिना)-१०००ग्राम, बावची बीज-१०० ग्राम, शिकाकाई- ५००ग्राम, तुलसी पत्र-१०० ग्राम, चाय पत्ती-५०ग्राम, जटामांसी-१००ग्राम।
निर्माण विधि :
अरीठा के बीज निकाल ले, शिकाकाई के छोटे-छोटे टुकड़े कर लें। बाकी के औषध के साथ में गोमूत्र बारह घंटे तक लोहे की कढ़ाई में रखे। दूसरे दिन उसे पकावे, आधा जल जाये तब तक गरम कर। बाद मे उतार कर छान ले, ठंडा होने पर पैक करें। पैकींग-१०० मी.ली.
उपयोग : बाल झड़ना, बाल सफेद होना, रुसी जैसी समस्या में लाभकारी और स्वच्छता हेतु

४. कामधेनु चंदन धूप :

सामग्री : गाय गोबर (ताजा)-७००ग्राम, कोयला-१२५ग्राम, नागरमोथ-१२५ग्राम, लालचंदन-१२५ग्राम, जटामांसी-१२५ग्राम, कपूर काचली-१००ग्राम, राल-२५०ग्राम, गाय का घी-२००ग्राम, उबला हुआ चावल-२००ग्राम, चंदन तेल अथवा केडवा तेल-२० मिली

निर्माण विधि :

कोयला, नागरमोथ, लालचंदन, कपूर काचली और राल चूर्णको अच्छी तरह हाथों से मसल के एकत्र करें, उसके बाद ताजा गोमय मिला फिर से मसल कर एकत्र कर सुगंधित तेल डाले, बाद उसकी धूप बत्ती तैयार करे, धूपबत्ती को थाली मे सुखावे। तैयार होने पर मजबूत पैकिंग में पैक करे। (पैकिंग १० नंग)

उपयोग : हवा शुद्धि, प्रदुषण रोधक, रोगाणू नाशक, मच्छर रोधक, स्वास्थ्य रक्षणार्थ। यह धूप धार्मिक विधिओ में भी उपयोगी है।

५. सादा चंदन धूप :

सामग्री : गाय का गोबर (ताजा)-१०००ग्राम, लकडी का बुरादा-२०० ग्राम, गाय का घी-२००ग्राम, उबला हुआ चावल-२००ग्राम, चंदन तेल अथवा केवड़ा तेल-२०मिली।

निर्माण विधि :

लकडी के बुरादे को छान ले, बाद ताजा गोमय और घी मिला कर मसल कर एकत्र कर सुगंधित तेल डाले, बाद में धूपबत्ती तैयार करे, धूपबत्ती को थाली में सुखावे, तैयार होने पर मजबूत पैकिंग में पैक करे। (पैकिंग-१० नंग)

उपयोग : हवा शुद्धि, प्रदूषण रोधक, रोगाणु नाशक, मच्छर रोधक, स्वास्थ्य रक्षणार्थ। यह धूप धार्मिक विधिओं में भी उपयोगी

है।

६. कामधेनु काला दंतमंजन

सामग्री : गोमय भस्म-७५०ग्राम, कपूर-२५ ग्राम, लौंग पावडर-२५ग्राम, कालीमिर्च पावडर-२५ग्राम, सेंधा नमक-१२० ग्राम, शुद्ध फिटकरी-५०ग्राम

निर्माण विधि : मंजन पावडर के लिये जमीन में ४x४x४ फुटका गड्ढा तैयार कर लें। यह खड्डे में बाहर से जलाये हुए ५-६ कंडे डाले। ऊपर दूसरे कंडे एक सरीके से रखे। ज्यादा कंडे जलाने लगे उसके बाद हवा ना जावे ऐसा बंध करे (संधी बंधन)। एक दिन बाद निकाले। जो काले कोयले जैसे हो उसे ले, उसे पावडर कर छान लें, सेंधानमक को पानी साथ मिला तैयार करें। एक बर्त्तन में काला कोयले का पाउडर, औषध पाउडर मिश्र करे उसमें नमक वाला पानी धीरे-धीरे डालते रहे और मिलाते रहे, तैयार मंजन का उपयोग आठ दिन बाद करे। (पैकिंग ३०ग्राम)

उपयोग : दंत रोगो में हितकर, मसूड़े फूलना, मुखकी दुर्गंध में लाभकारी और दांतो को चमकदार बनानेवाला।

७. कामधेनु लाल दंतमंजन

सामग्री : गोमय भस्म-१किलो, त्रिफला चूर्ण २५ग्राम, लौंग पावडर-७५ग्राम, कालीमिर्च पावडर-२५०ग्राम, बबुल छाल चूर्ण-१०० ग्राम, बोरसली छाल चूर्ण-५०ग्राम, समुद्र लवण-२५०ग्राम, शुद्ध सोनागेरु-२५०ग्राम, गो घी-२५ग्राम

निर्माण विधि :

गेरु को गाय के घी से शुद्ध करे, बाकी के सब वनस्पति चूर्णों को मिश्र करें। छन्नी से छान ले। बाद में पैक करें। (पैकिंग ३० ग्राम)

उपयोग : दंत रोगों में हितकर, मसुडे फुलना, मुखकी दुर्गंध में

लाभकारी और मुँह के छाले के रोग में भी लाभ देता है।

८. गोमूत्र फिनाइल :

सामग्री : गोमूत्र-१लीटर, नीम पत्र हरा-२००ग्राम, पाइन तेल (इमलसीफायर युक्त)-५०ग्राम, उबाला हुआ पानी-८००मिली,

निर्माण विधि :

नीम-पत्र को गोमूत्र में डाल कर उबाले। चौथा भाग रहने पर ठंडा कर छान ले। बाद में पाइन ऑयल और गोमूत्र-नीम-क्वाथ हिलाते हुए कर मिश्रित करें। बाद में उसमें धीरे-धीरे पानी डाल हिलाते रहें। सब मिलाने के बाद भी थोड़ी देर तक हिलाते रहे, जिससे अच्छा फिनाइल तैयार होगा। हिलाने के लिए नीम लकड़ी का प्रयोग करे, बर्तन हमेशा कांच, चीनी मिट्टी या प्लास्टिक का रखे। (पैकिंग ५०० ग्राम, १लीटर)

उपयोग : कीटनाशक, जंतुनाशक, सफाई उपयोगी।

९. कामधेनु केशतेल :

सामग्री : तिल तेल-१८००ग्राम, नारियल तेल-२००ग्राम, रतन ज्योत-२५ग्राम, जटामांसी-२५ग्राम, कपूरकाचली-२५ग्राम, भांगरा -२५ग्राम, त्रिफला-२५ग्राम, गाय का दूध-२०००ग्राम, नींबु ६ नग, पानी-६लीटर, सुगंधी-२०मिली

निर्माण विधि :

सर्वप्रथम तिल तेल और नारियल तेल में ६ नग नींबू काट कर डाले, धीमी आंच पे पकावे, बाद भांगरा, त्रिफला, रतनज्योत को आधा अधूरा मसल कर चटनी जैसा बना ले, उसमें गाय का दूध एवं पानी का मिश्रण डाल धीमी आंच पर गरम करें, जब चटचट आवाज आना बंद हो और झाग आने लगे तब तेल तैयार हुआ समझे। वर्ती परिक्षण (वाती को तेल में भिगो कर जलाने से आवाज

बिना जलनी चाहिए) लें। तैयार तेल में कपूर काचली और जटामांसी की पोटलीओ को आठ दिवस तक डुबाके रखे, ९ वें दिन तेल छान कर पैक करें। (पैकिंग १०० मीली)
उपयोग : बालो के सभी रोगो में प्रभावी है।

१०. बर्तन धोने का पावडर

सामग्री : गोमय भस्म-१०किलो, नींबू की सुगंध-१०ग्राम।
निर्माण विधि :
गोमय भस्म और नीबू की सुगन्धी डाल अच्छे से मिश्रण करें। बाद में पैक कर दें। पैकिंग ५००ग्राम, १ किलो।
उपयोग : जंतुमुक्त और चमकीले बर्त्तन।

गो एवं कृषि आधारित ग्रामोद्योग से गाँव का धन गाँव में रहेगा और गाँव में ही रोजगार का सृजन होगा। स्वदेशी का विस्तार होगा और लघु उद्योग विकसित होगा। गाँव से शहर की ओर पलायन रुकेगा। मिलावट के जहर से भी बचेंगे

●●●

पाँचवा आयाम

गो-संवर्धन, नस्ल सुधार एवं गो-चिकित्सा

गोपालन सिर्फ दूध के लिए नहीं होना चाहिये। गोपालन मुख्यत: गोबर-गोमूत्र के लिये होना चाहिये। दूध के उद्देश्य से गाय को गर्भाधान करवाना ठीक नहीं। गोवंश की वृद्धि के लिए गर्भाधान करवाना उचित है। उसके साथ दूध प्राप्त होना अतिरिक्त लाभ के रुप में देखा जाना चाहिए। वर्तमान में गाय का गर्भाधान का मुख्य कारण दूध है ना कि गोवंश की वृद्धि। किसान के घर में गोवंश रखने का स्थान सीमित होने के कारण, वह गोवंश की संख्या बढ़ाना नहीं चाहता। लेकिन दूध के लालच में बछड़े पैदा करता है और फिर उनको कसाइयों को बेच देता है।

१. पुण्य दूध (अहिंसक दूध) की परिभाषा :

जिस दूध के उत्पादन में

१. दूध देने वाली गाय के बच्चे को उसके हिस्से का पर्याप्त दूध पिलाया जाता है,
२. उस गाय को धूप में हरा घास चरने के लिए ले जाया जाता है,
३. उससे उत्पन्न हर संतान का सुख पूर्वक पालन होता है,
४. दूध उत्पादन के लिए किसी भी पीड़ा-दायक, नुकसान-दायक उपायों का प्रयोग नहीं किया जाता है।

ऐसा दूध पुण्य दूध (अहिंसक दूध) कहलाता है।

यह दूध मनुष्य के लिए और गोवंश के लिए कल्याणकारी है।

२. पाप दूध (हिंसक दूध) की परिभाषा :

जिस दूध के उत्पादन में

१. दूध देने वाली गाय के बच्चे को पर्याप्त दूध नहीं पिलाया जाता या मार दिया जाता है,

२. उस गाय को चराने नहीं ले जाया जाता तथा एक ही खूंटे से दिन भर बांधे रखा जाता है,

३. उससे उत्पन्न संतानो को किसी न किसी समय कसाईखाने भेज दिया जाता है या उनकी उचित देखभाल नहीं होती,

४. दूध उत्पादन बढ़ाने के लिए कृत्रिम, पीड़ादायक या नुकसान-दायक उपायों का प्रयोग किया जाता है।

इस प्रकार से प्राप्त दूध पाप दूध (हिंसक दूध) कहलाता है।
पाप दूध मनुष्य के लिए और गोवंश के लिए भयंकर घातक है।

गाय का अर्थ भारतीय देशी गाय ही है, अन्य विदेशी पशु (जर्सी, हालिस्टिन) नहीं। उनका अन्तर हमको पता होना चाहिये।

देशी गाय एवं विदेशी गाय में अन्तर

देशी गाय	**विदेशी गाय**
पीठ पर उभार (ककुद्) और गल-कंबल मौजूद होता है।	पीठ सीधी और गल-कंबल नहीं होता है।

देशी गाय एवं विदेशी गाय में अन्तर

देशी गाय	विदेशी गाय
इसके दूध में कोई हानिकारक तत्व नही होता। यह बल व बुद्धिवर्धक और रोगनाशक है।	इसके दूध में BCM-७ तत्व होता है, जो मधुमेह, हृदयघात और कैंसर का कारण बनता है।
इसके दूध में वसा ७ प्रतिशत तक होता है।	इसके दूध में वसा ३ प्रतिशत के करीब होता है।
इसके दूध को ए-२ कहते हैं।	इसके दूध को ए-१ कहते हैं।
इनका दूध, गोबर, गोमूत्र औषधि है।	इनका दूध, मल, मूत्र रोग कारक है।
यह १५ बार से ज्यादा माँ बन सकती है।	यह ४ से ५ बार ही माँ बन सकती है।
इन्हें बीमारियाँ बहुत कम लगती है।	सारी उम्र बीमारियों के चपेट में ही रहती है।
इनमें गर्मी सहन करने की अद्भुत शक्ति होती है।	गर्मी में कूलर व पंखों की आवश्यकता होती है।
यह गर्मी में भी भरपूर दूध देती है।	गर्मियों में इनका दूध बहुत कम हो जाता है।
यह कम चारा खाती है।	यह अधिक चारा खाती है।
इनके बैल खेती के लिए उपयोगी हैं।	इनके बैल कृषि के लिए उपयुक्त नहीं होते।
यह बहुत ही सुन्दर और भावनात्मक होती है।	यह बदसूरत और भावना विहीन होती है।
यह हजारों वर्षों से भारत भूमि पर विकसित हुई है।	विदेशों से भारत लाई गई। भारत के जलवायु के अनुकूल नहीं है।

आज बड़ी मात्रा में भारतीय गोवंश या तो कत्ल कर दिया गया या फिर विदेशी प्रजाति से संकरित हो गया। बचे हुए भारतीय प्रजातियों की भी उत्पादन क्षमता में गिरावट आई है। इसके पीछे मूल कारण है गो-संवर्धन एवं नस्ल सुधार विषय का अज्ञान। यदि भारतीय नस्ल को बचाना है तो नस्ल सुधार कार्यक्रम को समझना होगा और उसे अपनाना होगा। यह भी बहुत ही सरल है। सिर्फ तीन बातों का ध्यान रखने से गायों की आने वाली पीढ़ी में उत्पादन क्षमता कई गुणा बढ़ाई जा सकती है और भारतीय नस्ल की गाय तैयार की जा सकती है।

१. गायों का गर्भाधान उन्नत भारतीय प्रजाति के नन्दी से या बीज से करवाएं। आवारा नन्दी से न करवाएं। यदि नन्दी से करवाते हैं तो तीन साल में उस नन्दी को दूसरे नन्दी से बदलना चाहिए अन्यथा वर्ण-संकर होगा।

२. गायों का, गर्भ के समय और प्रसव के बाद, खुराक का पूरा ध्यान रखें।

३. गाय के बच्चों को शुरु के तीन महीने तक २ थन का पूरा दूध पिलायें, बाद में एक थन का दूध अंत तक पिलायें।

खुराक - ३०० किलो वजन की गाय को शरीर भर का एक प्रतिशत दाना, २ प्रतिशत सूखा चारा, ४ प्रतिशत हरा चारा, १२ प्रतिशत पानी देना चाहिए। पानी में ५० ग्राम नमक और थोड़ा कलि करने वाला चूना डाल देना चाहिए। चूने से कैल्शियम की पूर्ती होती है। सप्ताह में एक बार सुबह नीम पत्ता खिलाना चाहिए, जिससे पेट में कृमि निर्माण न हो। नंदी को नित्य ५० ग्राम गुड़ तेल में भिगोकर देना चाहिए। उन्हें नित्य ७५ ग्राम शतावरी देनी चाहिए। गायों को नित्य ३० ग्राम शतावरी देनी चाहिए, इससे १५ दिन में एक लीटर दूध बढ़ जायेगा। चारे के साथ अग्निहोत्र की भस्म मिला दें। इससे चारा सुरक्षित रहेगा और भस्म युक्त चारा खाने से गोवंश में रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ेगी।

आवास - गायों का आवास व्यवस्थित हो और किसान के आवास

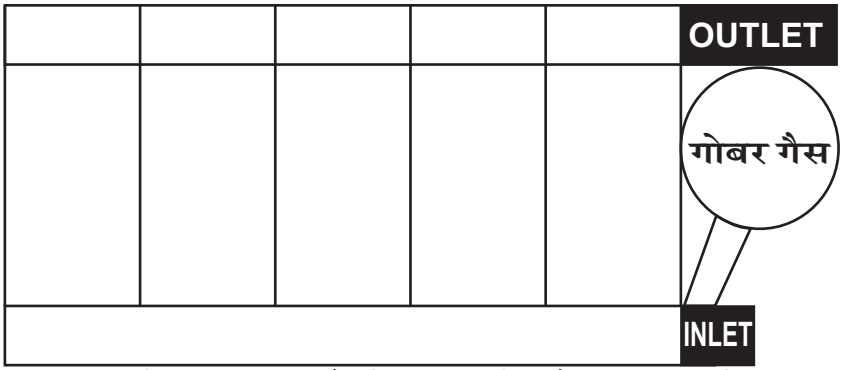

पाँच गोवंश का आवास और दो घन मीटर गोबर गैस संयंत्र की रुप रेखा

के साथ हो, दूर नहीं। गायों का फर्श खड़ी ईंटों से बनाना चाहिए। इसके अलावा गायों के लिए रबड़ के मैट मिलते हैं, उनका भी उपयोग किया जाना चाहिए अन्यथा कठोर फर्श से गाय के अयन खराब हो जाते हैं। गोबर- गोमूत्र संग्रह करने की व्यवस्था हो। आवास में नालियाँ इस प्रकार बनाये जिससे गोमूत्र और गोशाला का धुला हुआ पानी एक टंकी में संग्रह हो सके।

रख-रखाव - गायों को मच्छरों से व ठंड से बचाने के लिए गोशाला में एक कोने में प्रतिदिन शाम को गोबर के कंडे जला देने चाहिए। जहाँ से सारी गोशाला में धुँआ चला जाय। गायों को दूध निकालने से पहले चारा खिला देना चाहिए। गाय पारिवारिक जीव है उसे प्यार चाहिए। उससे नित्य १०-१५ मिनट बात करनी चाहिए, उस पर हाथ फेरना चाहिए। दूध निकालने का समय सुबह व सायं का निश्चित हो। दूध निकालते समय मधुर वंशी की धुन लगा देनी चाहिए। दूध से हटने के बाद जो बछड़े नन्दी नहीं बन सकते उनकी नसबंदी (बधियाकरण) करवा देनी चाहिए। बाद में बड़ा होने पर उन्हें कृषि कार्य व माल ढ़ोने के लिए प्रशिक्षित करना चाहिए।

चरने/घूमने की व्यवस्था - गायों को खुला घूमने के लिए बाड़ा बनाना चाहिए या चराने ले जाने की व्यवस्था करनी चाहिए। चरने वाली गाय स्वस्थ रहती है और उसके गोबर-गोमूत्र की गुणवत्ता भी बढ़ती है।

हरा चारा उगाना - गायों के लिए हरा चारा उगाने की व्यवस्था भी होनी चाहिए। हरा चारा मिलने पर गायों में कई प्रकार के रोग नहीं होते। उनको पूरा पोषण मिलता है। उनकी उत्पादन क्षमता बढ़ती है। हरा चारा स्वयं उगाने से चारे का खर्च भी कम आता है। झेन्जुआ

घास ऐसा घास है जिसे एक बार लगाने से साल भर चारा मिलता रहता है। बार-बार लगाना नहीं पड़ता। सुबबुल और सहजन के पेड़ के पत्ते भी चारे के साथ दिया जा सकता है। इसके लिए ये पेड़ लगाने चाहिए।

गायों की चिकित्सा - विदेशी पशुओं की तुलना में भारतीय गाय की सभी प्रजातियों में रोगों से लड़ने की क्षमता अधिक होने के कारण बीमार नहीं पड़ती। अत: उसके इलाज में ज्यादा खर्च नहीं होता। यदि बीमार पड़ भी जाये तो चिकित्सा के लिए देशी और होमियोपैथी पद्धति का उपयोग करना चाहिए। इससे अच्छे परिणाम मिलते हैं तथा खर्च भी कम लगता है।

पशुओं में होने वाले रोग एवं होम्योपैथिक उपचार

क्र.	रोग	लक्षण	दवाई	मात्रा
१	मुँहपका (छाले खुरपका)	मुँह व पैर में छाले चलने में परेशानी, खुरों में घाव	बोरेक्स २०० मर्कसॉल २०० केलेन्डुला २००	२० गोलियाँ पानी में २-३ बार
२	रतौंधी	दिखने में परेशानी	युफ्रेशिया २०० कास्टीकम २००	२० गोलियाँ पानी में २-३ बार
३	आँखे आना	पानी आना, लाल होना जलना	युफ्रेशिया २०० बेलाडोना २०० पल्सेटिला २००	२० गोलियाँ पानी में २-३ बार
४	पेशाब में खून आना	पेशाब में जलन, गरम व खून आना	फेरमफास २०० हेमामेलिस २०० केन्थेरिस २०० फास्फोरस २००	२० गोलियाँ पानी में २-३ बार

पशुओं में होने वाले रोग एवं होम्योपैथिक उपचार

क्र.	रोग	लक्षण	दवाई	मात्रा
५	फुलगोभी की तरह मस्से (Wart)	शरीर पर मस्से होना	थुजा २००	२० गोलियाँ पानी में २-३ बार
६	अन्य प्रकार के मस्से	शरीर पर मस्से होना	डलकामारा २०० कास्टीकम २००	२० गोलियाँ पानी में २-३ बार
७	जड़ निकलना Prolaps and Uterus बच्चेदानी का बाहर निकलना	बच्चे जनने के बाद पेशाब की जगह से जड़ निकलना, ब्यावने पशुओं के बैठ जाने पर होता है।	सिपीया २०० पोडोफाइलम २०० रुटा २००	२० गोलियाँ पानी में २-३ बार
८	गलघोंटू	गले में सूजन बुखार	यूपेटोरियम पर्फ २०० आयोडिनम २०० कालीबाइक्रोम२००	२० गोलियाँ पानी में २-३ बार
९	आफरा	पेट में गैस भरना, पेट फूलना, कब्ज टट्टी कड़ी होना	कांबोंवेज २०० कोल्चीकम २०० नक्स वोमिका २००	२० गोलियाँ पानी में २-३ बार
१०	चोट, घाव इन्ज्यूरी संड़ांध	शरीर पर घाव या चोट लगना व पस बन जाना	केलेन्डुला २०० आर्निका २००	२० गोलियाँ पानी में २-३ बार

पशुओं में होने वाले रोग एवं होम्योपैथिक उपचार

क्र.	रोग	लक्षण	दवाई	मात्रा
११	डायरिया (दस्त)	पतले पिचकारी के समान दस्त	ऐलोज २०० पोडोफाइलम २००	२० गोलियाँ पानी में २-३ बार
१२	खूनी दस्त	खून व आँव मिला पतला गोबर	मर्कसाल २०० मर्ककोर २००	२० गोलियाँ पानी में २-३ बार
१३	सर्दी, खाँसी, जुकाम	नाक से पतला पानी बहना व खाँसना	एलियमसिपा २०० ब्रायोनिया २०० एन्टिमटार्ट २०० आर्स आयोड २००	२० गोलियाँ पानी में २-३ बार
१४	जलना	आग से जलने पर	केनथेरिस २०० कास्टीकम २००	२० गोलियाँ पानी में २-३ बार
१५	पेट दर्द कुम्बड निकाल कर चलना	पेट दर्द जानवरों का कराहना	डायसकोरिया विलोसा २०० मेगफास २०० कोलोसिन्थ २००	२० गोलियाँ पानी में २-३ बार
१६	मोंच	माँसपेशियों में खिचाव लंगड़ापन, हड्डी में चोट फैक्चर, हड्डी टूटना	रसटाक्स २०० अर्निका २०० हायपेरिकम २०० रुटा २०० सिम्फायटम २०० कल्केरिया फास २००	२० गोलियाँ पानी में २-३ बार

पशुओं में होने वाले रोग एवं होम्योपैथिक उपचार

क्र.	रोग	लक्षण	दवाई	मात्रा
१७	दमा/ खाँसी	श्वास का तेज चलना	ब्लेटा ओरिन्यनटेलिस २०० इपिकाक २००	२० गोलियाँ पानी में २-३ बार
१८	उल्टी	मुँह से बारबार पानी गिरना	इपिकाक ३०	२० गोलियाँ पानी में २-३ बार
१९	गांठे (मंद) - ट्यूमर	शरीर पर गाँठ होना	केलकेरिया फ्लोर २००	२० गोलियाँ पानी में २-३ बार
२०	काँटा या सूई लगना	शरीर पर सूजन हो जाना	लिडमपाल २००	२० गोलियाँ पानी में २-३ बार
२१	खुजली होना	चर्म रोग	इचिनेशिया २०० सल्फर २००	२० गोलियाँ पानी में २-३ बार
२२	मूत्र रोग	बार बार पेशाब करना	कास्टीकम २००	२० गोलियाँ पानी में २-३ बार
२३	ब्याने के बाद (डिलीवरी होने के पश्चात)	बार बार पेशाब करना	अर्निका २००	२० गोलियाँ पानी में २-३ बार
२४	गोबर में कीड़े (वर्म)		सीना २००	

स्वाभाविक उपलब्ध देशी साधनों से चिकित्सा -

१) आफरा - (क) नारियल की रस्सी में छोटी-छोटी गांठे पास-पास लगाकर मुँह के अन्दर डालकर दोनों जबड़ों के बीच बाँध दें, इससे वह बार-बार मुँह चलायेगी और उसकी गैस बाहर आ जायेगी। या

(ख) उसे दो ती ग्राम शुद्ध हींग घोलकर पिला दें। इससे उसकी गैस निकल जायेगी। या

(ग) १०० ग्राम तारपीन का तेल, ५०० ग्राम तिल में मिलाकर बांस की नाल से पिला दें इसमें २५ ग्राम काला नमक भी मिला दें। यह भी आफरा दूर करने में सहायक होगा।

२) थनैला रोग - यह रोग गाय के बांधन का स्थान ज्यादा कठोर होने पर हो जाता है। अत: बाँधने की जगह (फर्श) मुलायम रहे। रोग होने पर थन से दूध आना बन्द हो जाता है, थन में दूध जमकर गादी पत्थर जैसी हो जाती है, इसके लिए शीशम वृक्ष के कोमल पत्तों की चटनी बनाकर थन के ऊपर गादी पर लेप कर दें ऐसा ५-६ दिन करें इससे गादी नरम हो जायेगी, तब नीम के पत्ते उबालकर ठंडा कर उस पानी की थन के अन्दर सिरींज की सूई हटाकर पिचकारी दे दें - बाद में दूध जमीन पर निचोंड़ दें - ऐसा करने से थन वापिस ठीक हो जायेगा।

३) जेर नहीं गिरने पर - गाय ब्याने के बाद कई बार, २-३ घंटे तक जेर नहीं गिरती

(क) इसे निकालने के लिए बांस के पत्ते खिलाने से लाभ होता है।

(ख) चुहारा (खारक) की गुठली आधी फोड़कर गुड़ में लपेट कर खिला दें थोड़ी देर में जेर बाहर आ जायेगी।

४) गाय का ताव (हीट) में न आना - चुहारा ४ (गुठली निकालकर) ८ दिन तक रोज खिलायें गाय हीट में आ जायेगी।

५) गाय ताव में आती है पर ठहरती नहीं - गर्भधारण नहीं करती - तब आधा चम्मच सूंघने वाली तम्बाकू का चूर्ण सिरींज में

भरकर (गाय के ताव (हीट) में आने पर) योनी के अन्दर स्प्रे कर दें बाद में गर्भाधान करायें, गर्भ ठहर जायेगा।

६) प्लास्टिक खाई हुई गायों की चिकित्सा - (क) सरसों का तेल १०० ग्राम, तिल का तेल १०० ग्राम, नीम का तेल १०० ग्राम, अरण्डी का तेल १०० ग्राम, देशी गाय की ताजा छाछ (मट्ठा) ५०० ग्राम, ५० ग्राम फिटकरी, ५० ग्राम पिसा हुआ सेंधा नमक, २५ ग्राम पिसि हुई लाल राई (सरसों नहीं) इन सबको घोलकर इतनी सामग्री सुबह सायं तीन दिन तक नित्य पिलानी है और तीन दिन हराचारा ही खिलाना है, सूखा चारा बिल्कुल नहीं - बाद में सामान्य चारा खिलायें - इससे पेट में हलचल मचेगी, प्लास्टिक अपना स्थान छोड़ेगा, जुगाली में मुँह में आयेगा, गाय उसे बाहर गिरायेगी ऐसा महीने भर तक करेगी इससे तीस चालीस किलो प्लास्टिक बाहर आयेगा। गाय ठीक हो जायेगी। ऐसी गाय को बाँध कर नहीं रखना चाहिए। दवा देते समय तीन दिन भी लम्बे रस्से से बाँधे ताकि वह घूम सकें।

या

(ख) कच्चा पपीता (पपैया) तीन किलो, सुबह सायं गाय को खिलाये इससे प्लास्टिक गल कर बाहर निकल जायेगा, कुछ दिन करें।

७) चर्म रोग, घाव, पूँछ का गलना : लोहे की कढ़ाई में २५० ग्राम घी में ५० ग्राम हरे नीम पत्ते गर्म करें। नीम पत्ते काले हो जाने पर उतार कर ठंडा कर लें। एक डब्बे में भर लें। प्रभावित स्थान पर लगाएँ। कुछ दिनों में रोग ठीक हो जाएगा।

८) खुरपका (खुरों में घाव, कीडे पड़ना) : नेपथलीन (Nephthelene) की गोली का चूरा कर घाव पर लगाएँ। कीड़े बाहर निकल जाएँगे और कुछ दिनों में घाव सूख जाएगा।

इस प्रकार गाँव में नस्ल सुधार एवं गो-संवर्धन का कार्य करने से ५-७ वर्षों में शुद्ध भारतीय गोवंश की संख्या में कई गुणा वृद्धि होकर दूध उत्पादन भी अनेक गुणा बढ़ जायेगा। इससे गाँव की आय में भी उल्लेखनीय बढ़ोत्तरी होगी। ●●●

गो-आधारित ग्राम विकास से होने वाले लाभ

१. **कृषि में लाभ**-कृषि कार्य में व्यय कम होने से कृषि में लाभ होने लगता है।

२. **स्वास्थ्य में लाभ, कुपोषण-मुक्त,रोग-मुक्त** - रसायन मुक्त होने से स्वास्थ्य सुधरने लगता है। आहार की गुणवत्ता बढ़ती है। दूध दही उपलब्ध होने से सही पोषण मिलता है।

३. **देश की अर्थव्यवस्था को लाभ** - रासायनिक खाद और कीटनाशक का उपयोग बंद होने से और खनिज तेल का उपयोग कम होने से विदेशी पूँजी की बचत होती है जिससे देश की अर्थव्यवस्था सुदृढ़ होती है।

४. **पर्यावरण को लाभ** - रसायन मुक्त खेती से पर्यावरण की रक्षा होती है। बैल चालित उपकरणों से भी प्रदूषण नहीं होता।

५. **ग्लोबल वार्मिंग का निराकरण**, उससे मुक्ति का उपाय - गोबर गैस और विभिन्न प्राकृतिक संसाधनोंके उपयोग के कारण ग्लोबल वार्मिंग का निराकरण

६. **रोजगार सृजन और बेरोजगारी से मुक्ति** - ग्रामोद्योग और लाभजनक कृषि से सभी को रोजगार मिलेगा।

७. **कर्ज से मुक्ति** - खेती में लाभ होगा तो कर्ज से मुक्ति मिलेगी। नया कर्ज नहीं लेना होगा।

८. **स्वावलंबन** - ग्राम एवं ग्रामवासी स्वावलंबी बनेगा। किसी

दूसरे पर निर्भर नहीं रहना पड़ेगा।

९. **ऊर्जा युक्त गाँव** - गो-आधारित ऊर्जा निर्माण के माध्यम से ऊर्जा की आपूर्ति होगी।

१०. **भरपूर कृषि उत्पादन, अन्नयुक्त** - गो-आधारित कृषि से उत्पादन अधिक होगा जिससे ग्राम धन-धान्य से भरा रहेगा।

११. **जलाभाव से मुक्ति** - जैविक कृषि के कारण जमीन की जल-धारण क्षमता में वृद्धि होगी। जमीन के नीचे का जल-स्तर बढ़ेगा।

१२. **आपराधिक मानसिकता का निराकरण** - गोबर-गोमूत्र से उत्पादित अन्न मनुष्य में सात्विकता पैदा करता है। इससे स्वाभाविक अपराध कम होंगे। जैसा खाए अन्न, वैसा होए मन।

१३. **कचरा प्रबंधन से स्वच्छ भारत** - चार पिट कम्पोस्ट के माध्यम से घर का सभी कचरा खाद में परिवर्तित होगा। इससे गाँव भी स्वच्छ रहेगा और खाद भी मिलेगा।

१४. **गाँव से शहर की ओर पलायन पर रोक** - जब गाँव में सम्पन्नता और रोजगार मिलेगा तो कोई क्यों शहर की ओर भागेगा। सबको पता है गाँव में जो सुख शांति है वो शहर में कहाँ।

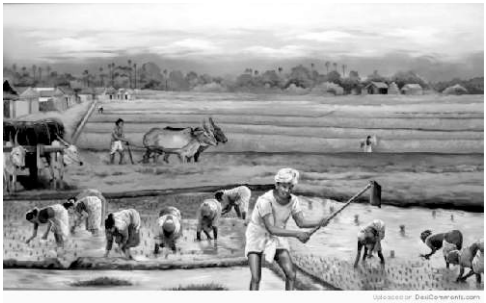

●●●

दो गोवंश एवं एक एकड़ भूमि से प्रतिवर्ष दो लाख रुपये की आय

गाँव का प्रत्येक परिवार एक एकड़ भूमि एवं दो गोवंश से प्रतिवर्ष २ लाख रुपये से अधिक आय कर सकता है। इसके लिए घर के दो सदस्यों को केवल समझदारी पूर्वक शारीरिक परिश्रम करने की आवश्यकता।

यह एक दिवा स्वप्न जैसा प्रतीत हो सकता है कारण वर्तमान स्थिति भिन्न है। खेती को घाटे का सौदा बताते हैं। प्रतिवर्ष हजारों किसान खेती में नुक्सान होने के कारण आत्महत्या कर रहे हैं। प्रतिदिन २०५३ से अधिक किसान खेती छोड़ रहे हैं। ऐसा भी नहीं कि खेती छोड़ने पर अन्य रोजगार सुलभ हैं। रोजगार के लिए दर-दर की ठोकरें खाना पड़ता है।

यह दृश्य बहुत ही भयावह है। यदि देश का अन्नदाता ही भूखा रहेगा तो देश की बाकी जनता भी ज्यादा दिनों तक सुख से नहीं रह सकती।

जानकारों का मानना है कि भारत में कृषि ही एकमात्र ऐसा क्षेत्र है जहाँ सभी को रोजगार मिल सकता है। जानकारों का यह भी कहना है कि भारत का कृषि क्षेत्र सम्पूर्ण विश्व को खाद्य आपूर्ति की क्षमता रखता है।

इस **'दो लाख की आय'** की योजना के अन्तर्गत न सिर्फ भारत के किसानों को रोजगार मिलेगा, बल्कि भारत कृषि उत्पाद को पूरे विश्व में निर्यात कर सकेगा।

कृषि में नुकसान का मुख्य कारण है कृषि में आय से ज्यादा व्यय का होना। व्यय मुख्य रुप से दो कार्यों में होता है - पहला, खाद, बीज, कीटनाशक इत्यादि की खरीद पर और दूसरा, मजदूरों पर। इस योजना में दोनों व्यय को समाप्त करने की बात कही गई है। ऐसा होने पर आय और शुद्ध लाभ में ज्यादा अंतर नहीं रहेगा।

मजदूरों द्वारा की गई खेती में लाभ नहीं बचता। इसलिए किसान और उसकी पत्नी दोनों कंधे से कन्धा मिलाकर कृषि कार्य में परिश्रम करे यही अपेक्षित है। दो व्यक्ति एक एकड़ की खेती आसानी से कर सकते हैं। इसके अलावा खेती में गो-आधारित कृषि पद्धति को अपनाना है। इससे खाद, बीज, कीटनाशक इत्यादि पर होने वाला खर्च बंद हो जायेगा। लगभग बिना खर्च के खेती होगी।

एक बात ध्यान में आती है कि फलदार वृक्षों की खेती में परिश्रम कम लगता है और आय भी अधिक होती है। इसलिए ज्यादा से ज्यादा किसानों को फलदार वृक्षों की खेती को अपनाना चाहिए। अनुभव से यह भी ध्यान में आया कि किसान का आवास

और खेत संलग्न होना चाहिए। इसके कई लाभ है। इससे खेत पर लगातार निगरानी बनी रहती है, जिससे चोरी की संभावनाएं कम होती है और रोग व कीट लगने पर तुरंत पता चल जाता है, जिससे

फसल को समय रहते कीट या रोग से होने वाले नुकसान से बचाया जा सकता है। इसके अलावा खेत में आने-जाने में समय की बचत होती है एवं खेत तक खाद इत्यादि सामान ढ़ोने में व्यय होने वाले परिश्रम और धन में भी बचत होती है। कई बार किसान की जमीन कई टुकड़ों में बंटी हुई होती है। जहाँ तक संभव हो उनको इकट्ठा करने का प्रयास करें। इससे भी परिश्रम और धन की बहुत बचत होगी। कृषि के अलावा गो-आधारित ग्राम विकास के बाकी चार आयामों को भी अपनाकर प्रत्येक ग्रामवासी स्वयं समृद्ध बन सकता है और अपने साथ-साथ गाँव को भी समृद्ध बना सकता है।

वैभवशाली कृषक परिवार से वैभवशाली ग्राम
वैभवशाली ग्राम से वैभवशाली राष्ट्र का निर्माण

●●●

गाँव के विकास में शहर का योगदान कैसे हो ?

प्रत्येक शहर चाहे तो अपने निकटवर्ती गाँव को अपना बनाकर स्वयं का एवं उस गाँव का भला कर सकता है। इसके लिए शहर का एक मोहल्ला हो जहाँ लगभग १००० परिवारों का समूह हो जो उस ग्राम से जुड़ना चाहता हो। ऐसे शहर के एक-एक समूह एक गाँव से जुड़ेगा, जिसे वह अपना गाँव समझेगा और मानेगा। उस गाँव में उत्पादित शुद्ध अन्न, फल, सब्जी, दूध, दही, घी इत्यादि उस समूह को प्राप्त होगा। साथ ही उस मोहल्ला और उसके गाँव में एक ताल-मेल का वातावरण निर्माण होगा। इसके लिए शहर वालों की तरफ से एक प्रशिक्षित कार्यकर्ता उस गाँव में नियुक्त किया जायेगा जो उस ग्राम में ग्राम विकास का कार्य आगे बढ़ायेगा।

शहर के लोग अपने गाँव के भाईयों को कुछ आर्थिक मदद कर उनका सहयोग करेंगे और गाँव वाले अपने शहर के भाइयों को शुद्ध खाद्य सामग्री उपलब्ध कराकर ऋण का भुगतान करेंगे। ऐसी व्यवस्था बनने पर शहर और ग्राम की दूरियां घटेगी और साथ ही दोनों की समस्याएँ भी घटेगी। शहर वालों को गाँव मिल जायेगा और गाँव वालों को शहर मिल जायेगा जिसे वो अपना कह सकते हैं। शहर वाले गाँव घुमने आयेंगे और गाँव वाले शहर घुमने आयेंगे। इससे दोनों का विकास होगा और संबंध मधुर बनेंगे। शहरवासी और ग्रामवासी में सामंजस्य बढ़ेगा।

गाँव की समिति ही पैकेजिंग (packaging) और डिलेवरी (delivery) का कार्यभार संभालेगी तो बिचौलियों द्वारा

होने वाला शोषण समाप्त होगा। तकनीक के उपयोग में शहरवासी ग्रामवासी का सहयोग करेंगे। जिससे माँग और आपूर्ति (demand and supply) का नियोजन करने में सरलता होगी। शहर की कमियों को गाँव दूर करेगा और गाँव की कमियों को शहर दूर करेगा।

गाँव का उत्पाद सीधे शहर में बिकने से किसान को अधिक कीमत मिलेगी और शहर वालों को भी शुद्ध एवं विषमुक्त आहार उचित मूल्य पर प्राप्त होगा।

यह सम्बन्ध सिर्फ आर्थिक लेने-देन तक सीमित नहीं होगा। यह एक पारिवारिक सम्बन्ध होगा। दोनों एक दूसरे के सुख-दुख में सहभागी बनेंगे, एक दूसरे के त्यौहारो व उत्सवों में सम्मिलित होगें। एक दूसरे के प्रति आशंकाओं को दूर कर विश्वसनीयता पूर्ण वातावरण का निर्माण करेंगे।

हर शहर अपने निकटतम ग्राम से जुड़ेगा और हर ग्राम अपने निकटतम शहर से जुड़ेगा। निकटतम होने से परिवहन में खर्च एवं समस्याएँ कम आएँगी।

शहर और ग्राम का यह प्रेम मिलन राष्ट्र की प्रगति में एक नये अध्याय का सूत्रपात होगा। इससे ग्रामवासी सम्पन्न बनेगें और शहरवासी स्वस्थ रहेंगे। गाय बचेगी, ग्राम बचेगा, पर्यावरण बचेगा, स्वास्थ्य बचेगा।

●●●

सरकारी योजनायें, सहयोग एवं अनुदान

सरकारी योजनाओं का यथासंभव लाभ लेना चाहिए। इससे प्रोत्साहन मिलता है। यह अलग बात है कि सरकारी योजनाओं का लाभ मिलना इतना आसान भी नहीं है। फिर भी प्रयास करने में कोई बुराई नहीं है।

वर्तमान में चल रही कुछ योजनायें जो गो-आधारित ग्राम-विकास में उपयोगी सिद्ध हो सकती है उनका उल्लेख यहाँ किया गया है।

१. पारंपरिक कृषि विकास योजना

२. कृषि सिंचाई योजना

३. गोबर-गैस संयंत्र पर अनुदान

४. दुग्ध उत्पादन विकास योजना

सरकारी योजनायें घटती बढ़ती रहती है। अत: अपने निकटवर्ती सरकारी कार्यालय में सरकारी अधिकारियों से मधुर संपर्क बनायें रखें। उनसे नवीनतम योजनाओं की जानकारी मिलती रहती है। इसके लिए इंटरनेट का भी सदुपयोग करना चाहिए। सरकारी योजनाओं की अधिकांश जानकारी सम्पर्कित विभाग की वेबसाइट से भी प्राप्त की जा सकती है।

जिन संस्थाओं या विभागों द्वारा सरकारी योजनाओं को क्रियान्वित किया जाता है उनकी सूचि निम्नलिखित हैं —

क्र:	संस्था या विभाग का नाम	वेवसाइट
1.	Council for Advancement of People's Action & Rural Technology, (CAPART)	www.capart.nic.in
2.	National Bank for Agriculture and Rural Development (NABARD)	www.nabard.org
3.	Mission for Integrated Development of Horticulture (MIDH)	www.hornet.gov.in
4.	Khadi and Village Industries Commission	www.kvic.org.in
5.	National Horticulture Board	www.nhb.gov.in
6.	Department of Agriculture and Cooperation	www.agricoop.nic.in
7.	Department of Animal Husbandary	www.dahd.nic.in

सरकारी योजनाओं की जानकारी प्राप्त करने के लिए सूचना के अधिकार (RTI) का भी उपयोग किया जा सकता है।

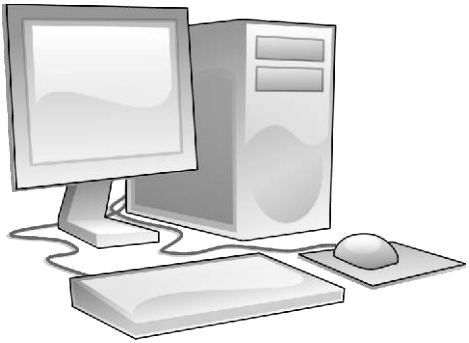

●●●

सहकारिता : सफलता का मूल मन्त्र

गाँव का प्रत्येक किसान अपने आप को अकेला समझता है और इसलिए अपने आप को कमजोर महसूस करता है। उसे लगता है कि इतना सब कुछ वह नहीं कर सकता, क्योंकि वह अपने को अकेला समझता है।

इस सोच से बाहर निकलना होगा। किसान भाइयों को संगठित होना होगा, संगठन ही सफलता की पहली सीढ़ी है। इसके लिए सेल्फ हेल्प ग्रुप या को-ओपरेटिव सोसाइटी या Producer Company का गठन किया जाना चाहिये। संगठन के कई लाभ हैं। संगठन या समिति के माध्यम से गो-आधारित ग्राम विकास के कार्यक्रम को अपनाने में सुगमता होगी। समिति बनने से ही कार्य का विभाजन करना संभव होता है। योग्यतानुसार कार्य का विभाजन किया जाना चाहिये। खेती, प्रसंस्करण, भण्डारण, ग्रामोद्योग, विपणन, बीज भण्डारण, लेखा-जोखा, सरकारी विभागों से संपर्क इत्यादि कार्य विभागों में व्यक्तियों या सदस्यों का नियोजन किया जाना चाहिये। गाँव का पढ़ा-लिखा युवा भी इसमें अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। प्रत्येक विभाग में कम से कम दो व्यक्ति हो जिससे एक की अनुपस्थिति में दूसरा संभाल सके और काम न रुके। समिति के कार्य की नियमित समीक्षा हो इसके लिए साप्ताहिक बैठक होनी चाहिए।

संगठन में शक्ति है

●●●

गाँव का विकास कौन करेगा ?

१. **सरकार** द्वारा ग्राम विकास की कई योजनाएँ चलाई जाती है।

२. **मंत्री** अपने मंत्रालय से विभिन्न विकास कार्यो के लिए धन का आबंटन करते हैं।

३. **प्रशासनिक अधिकारी** सरकारी योजनाओं को क्रियांवित करता है।

४. **समाजिक संस्थाएं** कई स्थानों पर सेवा एवं ग्राम विकास का कार्य कर रहे हैं।

५. **उद्योगपति** धन देकर विकास कार्य में सहयोग करते हैं।

६. **धार्मिक संस्थाएँ** द्वारा भी विकास के कई कार्यक्रम एवं प्रकल्प चलायें जाते हैं। ग्राम विकास में उनका भी महत्वपूर्ण योगदान है।

७. **गोशालाएँ** ग्राम विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। कई गोशालाएँ अपने आस-पास के गाँव में गो-संवर्धन के उद्देश्य से रचनात्मक कार्यक्रम चलाते रहते हैं।

८. **विदेशी संस्थाएं** भारत में विकास के लिए विदेशों से बड़ी मात्रा में धन भेजते है।

इन सभी के प्रयासों की उपयोगिता है और महत्व भी। परन्तु इनमें से कोई भी किसी गाँव का विकास तब तक नहीं कर सकता जब तक उस गाँव के लोग विकास नहीं चाहेंगे। गाँव का विकास तभी संभव है जब गाँव के लोग विकास चाहेंगे और उसके लिए प्रयास करेंगे,

अन्यथा संसार की समस्त सम्पदा लगाकर भी उस गाँव का विकास नहीं किया जा सकता। इसलिए गाँव का विकास गाँव की जनता ही कर सकती है, बाकी सभी उसमें सहयोगी हो सकते हैं।

जिस प्रकार भूखे व्यक्ति के सामने भोजन तो परोसा जा सकता है, लेकिन खाना तो उसे स्वयं ही पड़ेगा। स्वयं के मरे ही स्वर्ग मिलता है, यह कहावत सत्य है।

ग्रामवासी का नारा हो -

गाँव का विकास कौन करेगा ?
हम करेंगे, हम करेंगे।

ग्रामवासी संकल्प करे -

१. विदेशी वस्तुओं का उपयोग नहीं करेंगे।
२. प्लास्टिक का उपयोग नहीं करेंगे।
३. दूध की चाय नहीं पीयेंगे।
४. नशा नहीं करेंगे।
५. खेत की भूमि नहीं बेचेंगे।
६. गाय नहीं बेचेंगे।
७. रासायनिक खाद और कीटनाशक का उपयोग नहीं करेंगे।
८. माँसाहार नहीं करेंगे।
९. जर्सी पशु का पालन नहीं करेंगे।
१०. ऐलोपेथिक चिकित्सा नहीं करवाएंगे।

●●●

यदि कोई ग्राम समिति चाहे कि उनके ग्राम में गो-आधारित ग्राम विकास का कार्य प्रारम्भ होना चाहिये और उसके लिए हमारे सहयोग की आवश्यकता है तो कृपया हमसे सम्पर्क करें। इस कार्य में एक-दूसरे के सहयोग से निश्चित ही हम अपने अभिष्ट लक्ष्य को प्राप्त कर पाएँगे।

गाँव-गाँव में गो आधारित ग्राम विकास की धारा को प्रवाहित करने के लिए हजारों की संख्या में निष्ठावान, ऊर्जावान, परिश्रमी, सेवा-भावी एवं समर्पित गो-सेवाव्रती पूर्ण-कालीन कार्यकर्त्ताओं की आवश्यकता है। गो-सेवा परिवार, कोलकाता द्वारा योग्य मानधन एवं निवास की व्यवस्था की जाएगी।

गोसेवा परिवार
524B, रवीन्द्र सरणी
कोलकाता - 700003
E-mail : gosevaparivar@gmail.com
website : gosevaparivar.org

हमारी अन्य पुस्तकें :

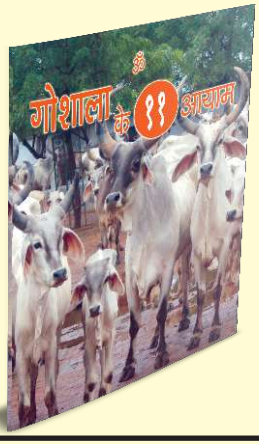

गोशाला के ११ आयाम

पाप-दूध
से
गो-हत्या

पुण्य-दूध
से
गो-रक्षा